महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब,हिमाचल,गुजरात एवं मध्यप्रदेश का लोकप्रिय समाचार पत्र

RNI NO.MAHHIN/2013/49425
डाक पंजीयन सं.MH/MR-NW-251/2013-/2015

e-paper:www.srushtiagronews.com

सृष्टी एग्रो

ग्रामिण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

वर्ष : 1 अंक - 18 | मुंबई, 16 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 2013 | मुल्य-2/- रुपए | पृष्ठ -8

सृष्टी एग्रो

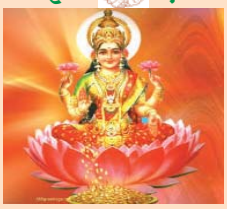

परिवार की ओर से सभी देशवासियों को दीपो के त्योहार दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं.
....संपादक

फिलिन तूफान के बाद 7 की मौत

बिजली और संचार प्रभावित

भुवनेश्वर: बंगाल की खाडी से उठे भयानक चक्रवाती तूफान फिलिन से उडीसा और आंध्रप्रदेश में जितने बडे नुकसान की आशंका थी, उतना नुकसान नहीं पहुंचा है। जानकारी के अनुसार करीब सात लोगों के मरने की खबर है।

उडीसा में तूफान ने गंजम, जगतीसहपुर, पुरी, खुर्दा, नयागढ, गजपति जिलों में नुकसान पहुंचाया, जबकि आंध्रप्रदेश में ये श्रीकाकुलम तक ही सीमित रहा।

इस तूफान की वजह से इन इलाकों में रात को करीब दो सौ किलोमीटर प्रति घंटे तक की तेज हवाएं चलीं जिनसे कई इलाकों में कच्चे घर झोंपडियां मकान और बिजली के खंभे उखड़ गए। तूफान भरी रात के बाद सुबह कुछ बेहतर रही। गोपालपुर और गंजम के अलावा बाकी जगहों से मिली खबरों के मुताबिक वहां बरसात या तो कम हो गई है या थम गई है। । (शेष पृष्ठ 2 पर)

पिछले सीजन में चावल खरीद लक्ष्य से कम

नई दिल्ली सितंबर में खत्म हुए सीजन में 341 लाख टन चावल की सरकारी खरीद सितंबर में समाप्त हुए मार्केटिंग वर्ष 2012-13 के दौरान सरकार की चावल खरीद 341 लाख टन रही। यह खरीद पिछले मार्केटिंग सीजन 2011-12 की खरीद के मुकाबले करीब तीन फीसदी कम रही। आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में सरकारी खरीद सुस्त रहने से कुल खरीद में कमी दर्ज की गई। पिछले अक्टूबर से शुरू हुए आलोच्य मार्केटिंग वर्ष के दौरान सरकार ने 402 लाख टन चावल खरीद का लक्ष्य रखा था। इस हिसाब से चावल की खरीद लक्ष्य के मुकाबले काफी कम रही। मार्केटिंग वर्ष 2011-12 में 350 लाख टन चावल की खरीद हुई थी। सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) और राज्य सरकार की एजेंसियां खुले बाजार में भाव गिरने से रोकने और किसानों को समर्थन देने के लिए सरकारी खरीद करती हैं, जिससे किसानों को सुनिश्चित भाव मिल सके। सरकार गेहूं और चावल की खरीद करके तमाम सरकारी कल्याणकारी स्कीमों में वितरित करती है। एफसीआई के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि हमने 2012-13 के दौरान 402 लाख टन लक्ष्य के मुकाबले 341 लाख टन चावल की खरीद की है।

खाद्य कानून की सफलता उत्पादन बढ़ाने पर निर्भर करती है: शरद पवार

दिल्ली मंत्री शरद पवार इस बात से इन्कार किया कि खाद्य सुरक्षा कानून को लेकर उनकी कोई आपत्ति है। पर उन्होंने कहा कि दिल्ली देश में अनाज का उत्पादन बढा कर दुनिया के इस सबसे बडे सामाजिक कल्याण कार्यक्रम को सफल बनाया जाना चाहिए न कि अनाज का आयात कर के। उन्होंने कहा कि चूंकि खाद्य सब्सिडी पर खर्च प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष 1,000 रूपए तक पहुंच गया है इसलिए मौजूदा सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) को नए तरीके से व्यवस्थित करने की आवश्यकता है ताकि अनाज का अनाज का एक एक दाना सही लाभार्थी तक तक पहुंचे। कांग्रेस नीत संप्रग सरकार इस कार्यक्रम को /पास पलटने/ वाला कार्यक्रम मानती है जबकि (शेष पृष्ठ 2 पर)

कॉफी निर्यात में आई कमी

नई दिल्ली, कॉफी वर्ष 2013 (30 सितंबर को समाप्त) में भारत का कॉफी निर्यात 5.34 फीसदी तक घट कर 2,99,266 टन रहा। यूरोपीय संघ और अमेरिका में पूरे साल मांग सुस्त रहने की वजह से कॉफी निर्यात में कमी आई है। 2012) में 3,16,164 टन का निर्यात किया था। कॉफी निर्यातकों का कहना है, 'निर्यात में कमी मुख्य तौर पर इटली, स्पेन, यूनान और पुर्तगाल जैसे यूरोपीय देशों में कमजोर मांग की वजह से दर्ज की गई है, क्योंकि वहां खरीदार सस्ती कॉफी पर अधिक ध्यान दे रहे हैं।अक्टूबर 2012 और 26 सितंबर 2013 के बीच निर्यात प्राप्ति 1.3 फीसदी घट कर 1,51,379 रुपये प्रति टन पर रही जबकि पूर्ववर्ती कॉफी वर्ष में यह 1,49,459 रुपये प्रति टन पर थी। कॉफी बोर्ड के अनुसार मूल्य के संदर्भ में कुल कॉफी निर्यात 4.1 फीसदी तक घट कर 3,530 करोड़ रुपये पर रहा जबकि पूर्ववर्ती वर्ष में यह 4,725 करोड रुपये पर था। निर्यातकों का कहना है कि (शेष पृष्ठ 2 पर)

खाद्य सुरक्षा मसला आपत्तियां दूर करने को समिति होगी गठित

दिल्ली खाद्य सुरक्षा मसला - भंडारण व परिवहन लागत पर हैं कुछ राज्यों को ऐतराज पहल भारत सरकार के खाद्य सचिव की अध्यक्षता में समिति का किया जायेगा गठन। इस समिति में राज्य के खाद्य सचिवों को भी शामिल किया जायेगा रजामंदी देश के पचास फीसदी राज्य दिसंबर तक खाद्य सुरक्षा कानून को दिसंबर तक लागू करने हो गए हैं सहमत देश के आधे राज्य खाद्य सुरक्षा कानून को दिसंबर तक लागू करने पर सहमत हो गए हैं। मंगलवार को खाद्य सुरक्षा कानून पर राज्यों के खाद्य मंत्रियों की बैठक के बाद खाद्य एवं उपभोक्ता मामले राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. के वी थॉमस ने पत्रकारों से कहा कि भंडारण और परिवहन लागत जैसे मुद्दों पर कुछ राज्यों को आपत्तियां है, इनके हल के लिए खाद्य सचिव (भारत सरकार) की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया जायेगा। उन्होंने कहा कि खाद्यान्न के भंडारण तथा परिवहन लागत को लेकर राज्यों की आपत्तियों पर समिति की सिफारिशें आने के बाद विचार किया जायेगा। इस समिति में राज्य के खाद्य सचिवों को भी शामिल किया जायेगा। खाद्य सुरक्षा अधिनियम एक ऐतिहासिक अधिनियम है जो देश के 82 करोड लोगों को खाद्यान्न सुनिश्चित करने के साथ ही लोगों को खाद्य एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने का अधिकार प्रदान करता है। यह कम कीमत पर लोगों को खाद्यान्न की पर्याप्त मात्रा प्राप्त करने का अधिकार देता है। इसे एक वर्ष के अंदर कार्यान्वित किया जाना है

महंगाई का नया बोझ, रेलवे किरायों में 2 फीसदी का इजाफा

नई दिल्ली आपकी जेब पर महंगाई ने फिर से पॉकेटमारी की है और जरिया बनाया है रेल किराए में बढ़ोतरी को.

रेल मंत्रालय ने पहले ही यात्री किराए में इजाफे का फैसला किया था, जो से लागू हो गया है. मेल और एक्सप्रेस ट्रेनों में एसी की सभी श्रेणियों और स्लीपर क्लास के किराए में 2 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है. साधारण दर्जे के सेकेंड क्लास के किराए में अधितकम 5 रुपये का इजाफा है जबकि एसी और स्लीपर में 10 रुपए से लेकर 95 रुपये तक किराया बढ़ाया गया है.

आवश्यकता है

* प्रत्येक जिले से संवाददाता चाहिए
*जिला स्तर सेल कॉर्डिनेटर चाहिए
* विज्ञापन हेतु असिसटेंट मैनेजर चाहिए.

संपर्क
022-66998360/61.
Fax: 022-66450908,Cell-9321758550,
info@srushtiagronews.com

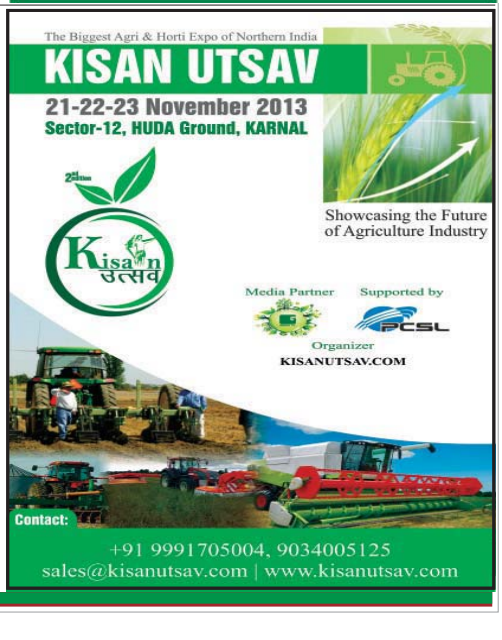

संपादकीय

किसान और मेले

हमारा देश अलग अलग धर्म व अलग अलग त्यौहारों का देश है!इसमें विभिनन्न संस्कृतियों का समावेश है !और यही समावेश हमारे लोकतंत्र की पहचान है !

हम सभी जानते है हमारा देश गाँव में बसता है !विकास का रास्ता गाँव से होकर ही जाता है !हमारे त्यौहार .मेले किसानो के उल्लास को दर्शाते है !

विगत वर्षो में किसानो से जुड़े मेले प्रचलित होते जा रहे है !किसान मेलो के बते प्रचलन का एक कारण यह भी है कि किसानो की बढती जागरूकता, .कृषि में होने वाले नए आविष्कार ,उत्पाद ,उपकरणों की जानकारियाँ मिलना .आज के उदारीकरण के दौर में कृषि का महत्व सभी को समझ आने लगा है ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को आंकना मुश्किल है परन्तु ग्रामीणों के कृषि बाज़ार पर नजर डालते है आधारभूत ढ़ांचे में मूलभूत परिवर्तन नज़र आता है!हम सब निर्विवाद रूप से कह सकते है हमारे देश की रीढ कृषि है!

आज के किसान जहां कृषि में आते नए परिवर्तन पर नज़र रखतेहै साथ ही साथ नई संचार नीति के माध्यम से ग्रामीणों की नज़र विश्व में होने वाले कृषि क्षेत्र में बदलाव पर भी रहती है!आज ग्रामीण भारत के बाज़ार में विभिन्न कृषि उत्पाद बनाने वाली कंपनियों की वृद्धि दर बड़ी है !

गाँव के किसान ही नही शहरी युवा भी कृषि में अपार संभावनायें देख रहे है !और खेतीकी पढाई की ओर उन्मुख हो रहे है !अखिल भारतिय कृषि शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर होने वाली परीक्षाओं के नतीजो के आकडे चौकाने वाले है!यह सभी बातें बताती है हमारे देश के युवाओं का कृषि के प्रति बढ़ते रुझान को.

.किसान मेले हमारे परम्परागत कृषि व्यवसाय को आधुनिक उपकरणों.,बीज ,खाद अन्य उत्पादों की जानकारी देते है साथ ही उत्पाद कंपनियों को किसानो के विचारो से मार्गदर्शन भी मिलता है ! कि वो किस तरह किसानो को लाभ पहुँचाने वाले उत्पाद लेकर आएं यही कारण है कि विगत वर्षो में किसान मेलो का प्रचलन बढता जा रहा है!

ऋतु कपिल
कार्यकारी सम्पादक

किसान मित्र

मिट्टी की जॉच और उसके फायदे

मिट्टी की जॉच क्यों ?

1.मिट्टी की जॉच से भूमि में उपलब्ध आवश्यक पोषक तत्वों का पता चल जाता है।

2.मिट्टी उस फसल के लिये उपयुक्त है या नही, जिसकी खेती करने जा रहे हैं।

3.बोने वाली फसल में कौन सी खाद/उर्बरक की कितनी मात्रा प्रयोग करनी चाहिये।

4.मिट्टी को किसी भूमि सुधारक की आवश्यकता है या नही। यदि है तो किस भूमि सुधारक की और कितनी मात्रा में।

जॉच हेतु मिट्टी का नमूना कैसे लें :–

1.जिस खेत का नमूना लेना हो उसमें 8–10 स्थानों पर निशान लगा लें।

2.प्रत्येक निशानदेह स्थान के ऊपरी सतह से घास–फूस, कंकड–पत्थर आदि साफ कर लें।

3.निर्धारित स्थान पर खुरपी या फावडे से ट आकार का 15 सेण्मी0 गहरा गड्ढा खोद लें।

4.गड्ढे से फालतू मिट्टी निकालकर खुरपी की सहायता से उसकी एक दीवार से लगभग 2 सेमी मिट्टी की परत निकाल लें या मृदा नमूना बर्मे से नमूना एकत्र कर लें।

5.इस मिट्टी को साफ सुथरे ढे, तसले या बोरी पर रख लें।

6.इसप्रकार खेत के बाकी 8–10 निशानदेह स्थानों से भी मिट्टी का नमूना ले लें। एक खेत के सब नमूनों को एक जगह इकट्ठा करके आपस में अच्छी तरह मिला लें।

7.ऊसर भूमि या फलों की खेती हेतु विभिन्न गहराई 0–15, 15–30, 30–60 एवं 60–100 से0मी0 से अलग–अलग नमूने लेना चाहिये।

8. मिले हुये नमूनों की मिट्टी में से घास–फूस, जडें, कंकड–पत्थर निकाल लें और साफ मिट्टी को तसले या बोरी पर मोटी तह में फैला लें।

9.फैलाई गयी मिट्टी को चार बराबर भागों में बॉट लें। आमने–सामने के दो भागों की मिट्टी को रख कर बाकी फेंक दें।

10.इस प्रकिया को तब तक दोहरायें जब तक मिट्टी का कुल नमूना लगभग 500 ग्राम न रह जाय।

मिट्टी की जॉच के फायदे :–

(1)भूमि में उपलब्ध नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, सल्फर, जिंक आदि तत्वों और लवणों की मात्रा तथा पी0एच0 मान का पता चलता है।

(2)उर्बरकों के संतुलित प्रयोग में मदद मिलती है जिससे भूमि की उपज क्षमता बनी रहती है तथा खेती में कम लागत से अधिक उपज प्राप्त होती है।

(3)भूमि में किसी भूमि सुधारक रसायन जैसे कि ऊसर भूमि के लिये जिप्सम/पाइराइट और अम्लीय भूमि के लिये चूने की आवश्यकता का पता चल जाता है।

मिट्टी परीक्षण सही उपाय।
कम लागत से ज्यादा आय।।

मिट्टी नमूना लेते समय सावधानियॉ :–

(1) गीली मिट्टी से नमूना नही लेना चाहिये।

(2) जहॉ खाद का ढेर, मेड, नाली या पेड हो वहॉ से नमूना नहीं लेना चाहिये।

मेंड से लगभग 1.50 मीटर हटकर खेत के अन्दर से नमूना लें।

(3)ऊँची–नीची जगह से नमूना नही लेना चाहिये।

(4)ऊसर, सामान्य या अम्लीय भूमि का नमूना अलग–अलग लेना चाहिये।

(5)खेत मेंउगे किसी पेड के जड वाले क्षेत्र से नमूना नहीं लेना चाहिये।

(6)नमूनों को रसायनिक खादों की खाली बोरी पर कदापि न सुखायें।

(7) नमूनों को छाया में सुखायें।

डा0 वेद प्रकाश, प्राध्यापक ;मृदा विज्ञानद्ध
नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,
कुमारगंज, फैजाबाद ;उ०प्र०द्ध

श्रम असुरक्षा पैदा होने की दूसरी सबसे चुनौती – खाद्य सुरक्षा विधेयक

हुकमाराम चौधरी
कोरोमण्डल इन्टरनेशनल लिमिटेड,
बीकानेर राजस्थान)
डवइ.09828681020ए
Email-hkherwa@gmail.com

मनरेगा (महात्मा गांधी राष्ट्रीय गारन्टी रोजगार योजना) के बाद उद्योगपतियों के सामने दूसरी सबसे बड़ी चुनौती खाद्य सुरक्षा विधेयक आ रहा है मनरेगा के कारण श्रम बाजार दर आसमान छू रही है लेकिन अब तक इस विधेयक के पारित होते ही उसके चार चांद लग जायेंगे । यदि यह विधेयक प्रभावी ढंग से लागू हुआ तो निकट भविष्य में अकुशल श्रमिकों की श्रम दरें भी आसमान छूने लगेगी और वो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से महंगाई को प्रभावित करेगी। क्योंकि जब उत्पादन में अधिक खर्च होगा तो उत्पादककर्ता उस वस्तु का अधिक मूल्य चार्ज करेंगे जिससे महंगाई बढेगी। मनरेगा की वजह से तोलाराम कुकण व रामनिवास गोदारा (उर्वरकों के अधिकृत विक्रेता, बीकानेर, राजस्थान) के अनुसार लगभग 30–40 प्रतिशत श्रम की कमी का सामना करना पड़ रहा है और मजदूरों को बनाये रखने के लिए न्यूनतम मजदूरी से बढकर 50–70 प्रतिशत का भुगतान करने के लिए मजबूर है। इन चीजों के बजाय सरकार को उद्योग व नई तकनीकी में पैसे इन्वेस्ट करने चाहिए जिससे की अधिक से अधिक लोगों को रोजगार का सुअवसर प्रदान हो सके तथा श्रम में कुशल श्रमिकों को लाभ मिल सके।

इन सब में एक उम्मीद की किरण शहरों पर दबाव कम होने की दिख रही है गरीब सरकारी योजनाओं के माध्यम से अपनी बुनीयादी जरूरतों को पूरी हो जाएगी जिससे बडे शहरों में मलिन बस्तियां और शहरी रिक्त स्थानों पर जनसंख्या दबाव कम हो जायेगा। जिससे शहरों में कुशल श्रमिकों को अच्छे अवसल मिलने की उम्मीद है।

फिलिन तूफान...

बरहामपुर, पारादीप, कीलगपट्टनम, बरहाम पुर और खुर्दा से जानकारी है कि वहां लोगों को कुछ परेशानी का सामना करना पड़ा है।

तूफान की वजह से करीब आठ लाख लोगों को पहले ही सुरक्षित जगहों पर पहुंचाया जा चुका था और बाकी जो लोग थे वो घरों से बाहर नहीं निकले।

। उतना नुकसान नहीं पहुंचा है जितनी कि आशंका थी। उड़ीसा के बरहामपुर से खबर है कि वहां तूफान की वजह से पेड़ उखड़े हुए हैं। गाडियां तक पलट गई हैं और कई दुकानों के शेड हवा में उड़ गए हैं। तूफान की वजह से बिजली और संचार व्यवस्था पर ज़बर्दस्त असर पड़ा है। अब हवा की रफ्तार कम है और लोग घरों से बाहर निकलकर नुकसान का जायज़ा ले रहे हैं।

उड़ीसा के जगतीसहपुर ज़िले के पारादीप में बंदरगाह पर काम तूफ़ान की वजह से पहले ही बंद कर दिया गया था। यहां भी रात को तूफ़ानी गति से हवाएं चलीं। सुबह भी यहां हवा तेज़ थी, लेकिन अब धूप निकल आई है और हवा की गति भी काफ़ी कम हो गई है। आंध्रप्रदेश में इस चक्रवाती तूफ़ान का सबसे ज्यादा असर श्रीकाकुलम पर ही पड़ा है। यहां भी रात भर तूफ़ानी हवाएं चलती रहीं, हालांकि सुबह मौसम काफ़ी ठीक हो गया। सुबह क़रीब छह बजे यहां बारिश बंद हो चुकी थी और समुद्री हवाओं की रफ्तार भी सामान्य थी। यहां भी रात में हुए नुकसान का जायज़ा अभी लिया जा रहा है। लोग घरों से बाहर निकल आए हैं। यहां संचार व्यवस्था बहाल कर दी गई है हालांकि बिजली व्यवस्था पूरी तरह बहाल करने में कुछ वक्त लगेगा। उड़ीसा के खुर्दा में भी बारिश और तेज हवाएं चल रही हैं। रात क़रीब सवा नौ बजे ये तूफ़ान ओडिशा के गोपालपुर में तट से भीतर दाखिल हुआ लेकिन उससे कई घंटे पहले ही इन इलाकों को तूफ़ानी हवाओं और बारिश ने अपनी चपेट में ले लिया था। चक्रवाती तूफान की वजह से तटीय इलाकों में समुद्र में करीब तीन मीटर ऊंची लहरें उठीं, जिन्होंने एक बड़े तटीय इलाके को अपने आगोश में ले लिया। चक्रवाती तूफान का असर उड़ीसा के जगतीसहपुर, पुरी, खुर्दा, नयागढ़, गंजम, गजपति और आंध्र के श्रीकाकुलम तक पड़ा है। तूफान की वजह से कच्चे घर झोंपड़ियां और ऐसी दूसरी कमज़ोर चीजें तहस नहस हो गई हैं। उड़ीसा और आंध्रप्रदेश के अलावा तूफान का असर बंगाल और झारखंड पर भी पड़ रहा है, जहां तेज हवाएं चल रही हैं। प्रभावित इलाकों से लाखों लोगों को पहले ही सुरक्षित जगहों पर पहुंचाया जा चुका है। इस तूफान के मद्देनज़र स्थानीय प्रशासन एनडीआरएफ, सेना और अन्य सुरक्षा बलों ने अब तक का सबसे बड़ा बचाव अभियान चलाया है। एनडीएमए अध्यक्ष के मुताबिक, हवाओं की रफ्तार शुरुआती अनुमान से काफी ज्यादा हो सकती है। संभावित नुकसान और असर के मद्देनजर श्रीकाकुलम से 20 हजार और विशाखापत्तनम से 40 हजार लोगों को निकालकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा दिया गया है। रेड्डी ने कहा कि अधिकारियों को हालात से निपटने के लिए तेजी से तैयारियां करनी होंगी। उनके मुताबिक तूफान से फसल, सड़क और घरों को बड़ा नुकसान पहुंच सकता है।

खाद्य कानून की...

विपक्ष ने इसे 2014 के आम चुनाव से पहले एक /राजनीतिक बाजीगरी/ करार दिया है। खाद्य सुरक्षा कानून में करीब 82 करोड़ आबादी को सस्ते खाद्यान्न का कानूनी अधिकार प्रदान किया गया है। खाद्य कानून पर राज्यों के खाद्य मंत्रियों के सम्मेलन को संबोधित करते हुए पवार ने कहा, 'खाद्य सुरक्षा कानून पर मेरी आपत्तियों के बारे में काफी कुछ कहा गया है। समाज के गरीबों और जरूतमंदों के लिए किसी सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम को लेकर कोई आपत्ति होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।' उन्होंने कहा कि दुनिया में यह अपने किस्म का सबसे बड़ा सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम है। इसको लागू करना एक बड़ा भारी काम है। उन्होंने कहा, ' मेरा दृढता से मानना है कि हमें खाद्य सुरक्षा की बुनियाद घरेलू उत्पादन के मजबूत धरातल पर रखनी चाहिए न कि आयातित अनाज पर। । पवार ने कहा कि सरकारी खरीद के मजबूत तंत्र के कारण देश खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर हो सका है। उन्होंने कहा कि खाद्यान की भविष्य की मांग केवल तभी पूरी की जा सकती है जब कि यह सुनिश्चत हो कि किसानों को उनके उत्पाद का एक न्यूनतम समर्थन मूल्य मिलेगा और उनकी उपज खरीदी जाएगी, खास कर के पूर्वी राज्यों में।

कॉफी निर्यात...

पिछले वित्त वर्ष के दौरान अरेबिका कॉफी की कीमतों में तेज गिरावट की वजह से भी निर्यात में कमी आई है, क्योंकि बडी तादाद में किसानों ने अपनी बिक्री टाल दी। अरेबिका कीमतें लगभग 20-25 फीसदी नीचे आई हैं। दिसंबर डिलिवरी के लिए आईसीई अरेबिका कॉफी वायदा 1.4 फीसदी की गिरावट के साथ 1.1565 डॉलर प्रति पौंड पर बंद हुआ

किसानों का आधार-श्री राधाकृष्ण विखे पाटिल

*19 नव . 2010के राज्य मंत्री मंडल में श्री राधाकृष्ण विखे पाटिल जी को कृषि मंत्री के रूप में सम्मानीत करके किसानों को एक आधार दिया महाराष्ट्र राज्य के मुख्यमंत्री श्री पृथ्वीराज चव्हाण जी ने उन्हाकी लगन को देखकर उन्हें कृषि और व्यापर विभाग का मंत्री बनायाि

*श्री राधाकृष्ण विखे पाटिल को खुद कृषि का योग्य ज्ञान था , इसलिए वह किसानों की समस्या समजते है सन 1949 में उन्हके दादाजी स्व.विठ्ठलराव विखे पाटिल और पिताजी पद्मभूषण बालासाहेब विखे पाटिल इन्हें कृषि क्षेत्र में 'पद्मश्री' पुरस्कार से समानित किया गया था.

इस मंत्रिपद में समानित होते ही 23 नव 2010 को उन्होंने हर क्षेत्र के अधिकारिओं के साथ एक सभा ली और इसमे कृषि, व्यापर ,सब्जीमंडी, महामंडल,महाबीज ,कृषि उद्योग ,मार्केटिंग फेडरेशन और कृषि विद्यापीठ समितिया स्थापन कियाि

* श्री राधाकृष्ण विखे पाटिल जी के कार्य .....

*. नागपुर में खरीफ अधिवेशन में किसानों को सहारा दिया

*.सोलापुर में कृषि अधिकारीयों के भ्रष्टाचार के खिलाफ जाकर किसानों को योग्य मार्गदर्शन दिया

* .कृषि शिक्षा के विद्यार्थिय्यों को शिक्षा के महत्व और उन्हके साथ जाकर हर विभाग में उन्हें शिक्षा का मार्ग दिखाया

* .कृषि क्षेत्र के व्यवहार गतिमान करने के लिए हर क्षेत्र में लैपटॉप, कम्पुटर दिलवाया ,इसीके साथ अनेक योजनाओं के व्यवहार ऑनलाइन कीया ,इसलिए भारत सरकार को महाराष्ट्र राज्य के हर गाँव के बारे में कृषि की हर प्रकार की जानकारी मिली

* . किसानों के लिए कृषि बैंक कों से कर्ज उपलब्ध किए

*. किसानों को उर्वरक ,बीज, किटनाशक,कृषि उपकरण उपलब्ध किए

*. उन्होंने पहिली बार टोल फ्री क्रमांक 1800 -233--4000शुरू करके किसानों की कृषि परेशानी को समजा

*. उन्होंने हर गावों, जिल्हा और राज्य के हर ग्राहकोंको और किसकों को मिलाया

* . उर्वरको के लिए किसानों को हो जानेवाली परेशानी के लिए उन्होंने हर जिल्हो में ' बफर स्टोक' चालू किए

*. कृषि उत्पादन में बीजों के महत्त्व को ध्यान देकर राज्यों में बीजोउत्पदन कार्यक्रम शुरू किया

*.राज्य के कृषि मौसम पर ध्यान देकर उन्होंने राज्य में 9 मौसम विभाग स्थापित किए

* .कृषि क्षेत्र में किसानों को अधिक जानकारी देने के लिए हर जिल्हो में कृषि प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए ,इसी के साथ किसानों को मोबाइल ,रेडिओ एफ्ए द्वारा हर जानकारी करने के लिए सेवा की शुरुवात करी

*.कृषि के बातचीत के कार्यक्रम दूरदर्शन पर शुरू किए

* .कृषि क्षेत्र को और मजबूत बनाने के लिए अंतराष्ट्रीय वैज्ञानिक,महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ स्थापित करके, डॉ. राजाराम देशमुख जी का ज्ञान किसानों तक पहुचाया

* .आधुनिक कृषि ज्ञान किसानों तक पहुचने के लिए कृषि क्षेत्र के वेबसाईट बनाये और भारत संचार निगम के साथ 'महाकृषि संचार ' उपक्रम शुरू किए और पुरे जग में 'मोबाइल क्लोज यूजर ग्रुप' निर्माण किया

* .किसानों को कृषि बीमा योजनाए उपलब्ध की , इसीप्रकार कृषि उत्पादन बढाने में एक नया रास्ता दिखाया

* .किसानों को खेती के बारे में अंतराष्ट्रिय शिक्षा उपलब्ध करने के लिए आर्थिक मदत करी ,इसलिए राज्यों में से हजारो किसान इजराइल ,व्हितनाम, मेलशिया,हौलैंड ,जर्मनी ,स्विजरलैंड ,फ्रांस में कृषि विद्या प्राप्त करके आए

* .खेतो में मजदूरो को आने वाली समस्याओं पर ध्यान देकर उन्हें खेतों के साधन उपलब्ध कराएि

* . कृषि उत्पादन बढ़ने के लिए उन्होंने किसानों को 'कृषिरत्न ,कृषिभूषण, कृषि मित्र और उद्यांनपंडित इससे समानित किया

* .कृषि क्षेत्र में हर प्रकार की समिति और व्यापर योजनाये बनाके हर प्रकार वो किसानों के साथ रहे

* .राज्यों में हर जगह किसानों के उत्पादन को योग्य दाम मिलने के लिए योग्य व्यापर उपलब्ध कराए

* राज्य के कृषि उत्पादनों को पूरे देश में फ़ैलाने के लिए दिल्ही ,मुंबई,कोलकत्ता,हैदराबाद में कार्यालय स्थापन किए

* राज्य के हर भागों में कृषि ज्ञान बढाने के लिए उन्होंने राज्यों के आदिवासी भागों में भी कृषि विद्यापीठ शुरू किएि

* कृषि मंत्री के रूप में श्री राधेकृष्ण विखे पाटिल महाराष्ट्र राज्य के ' अन्न दाता' बने और श्री विजय कुमार अवते हमेशा उन्हके साथ एक साया बनाकर कृषि क्षेत्र को बढ़ाते रहे

ममता म्हात्रे

एक सपने की उड़ान - धानुका एग्रीटेक लिमिटेड

कीटनाशको एवं जैव उरवकों का निर्माण करने वाली धानुका एग्रीटेक लिमिटेड वृहद स्तर अपने प्रमुख उत्पादों जैसे हर्बिसिड, इन्तेक्षिसिदेस और फुन्गिसिदेस का 7000से भी ज्यादा वितरको व 7500 से भी अधिक खुदरा व्यापारियों के विशाल नेटवर्क के द्वारा10 मिलिओन से भी ज्तादा किसानो को अपने उत्पाद उपलब्ध कराती हे कंपनी का 5 जापानी 4 अमेरिकी और यूरोपियन कंपनियों से तकनकी रूप से टाई अप हे.

धानुका एग्रीटेक लिमिटेड कंपनी का नेतृत्व एक अनुभवी एवं युवा टीम के हाथो में हे जिसकी कमान इसके संस्थापक श्री आर जी अग्रवाल एवं श्री एम् के धानुका के कुशल प्रबन्धन में लगभग पचीस वर्षो से शानदार प्रदर्शन करती आ रही हे कंपनी अपनी तीन उत्पादन इकाइयों जो गुडगाँव , सानंद एवं उधमपुर में स्थित हे के द्वारा देश एवं विदेश के बाजारों में अपने उत्पादों का वितरण कर रही हे कंपनी अपने प्रमुख उत्पाद टार्गा सुपर का अच्छा टर्नओवर कर रही हे जिसका की तकनिकी टाई अप जापान की कम्पनी निसान केमिकल लिमिटेड से हे. धानुका के सबसे बड़े ग्राहक किसान, बागवान एवं कीटनाशक उत्पादों का संचालन करने वाले व्यापारी हे. कंपनी अपने कीटनाशक उत्पादों की वृहद् श्रृंखला सुद्रढ़ एवं योजनाबद्ध तरीके से ग्रामीण भारत के बाजारों में वितरित कर रही हे. अपनी अग्रणी एवं नवीनतम मार्केटिंग योजनाओ व 500 से भी अधिक सेल्स टीम एवं 1000 से भी ज्यादा धानुका कृषि चिकित्सको द्वारा बेहतर परिणाम प्राप्त कर रही ये टीम धानुका के उत्पादों को सही एवं योजनाबद्ध तरीके से उपयोग करने की विधि अपने ग्राहकों को बताती हे जिससे की इन उत्पादों का सही रूप से उपयोग हो सके वर्ष1980 में एक रुग्न औद्योगिक इकाई नोर्देर्ण मिनरल्स प्राइवेट लिमिटेड का अधिग्रहण करने से शुरुआत करने वाली धानुका एग्रोटेक लिमिटेड ने अपनी नीव रखी और आज विश्व की प्रथम 500 कंपनियों में लगातार दो वर्षो से अपनी उपलब्धि फोर्ब्स अवार्ड द्वारा दर्ज करा रखी हे. इसी बीच धानुका ने कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों से करार किया जिनमे प्रमुख रूप से जापानी, अमरीकी एवं यूरोपियन कंपनिया शामिल हे. कंपनी के अध्यक्ष श्री आर जी अग्रवाल द्वारा1980 में अपने साहसिक एवं दूरदर्शिता पूर्ण निर्णय क्षमता का परिचय देते हुए एक कीटनाशक रुग्न इकाई का अधिग्रहण कर सफल संचालन करते हुए धानुका एग्रीटेक लिमिटेड को इन उँचइयो तक पहुँचाया. वही कंपनी के प्रबंध निदेशक श्री महेंद्र कुमार धानुका ने अपने व्यावहारिक क्षमताओं का परिचय देते हुए प्रबंधको एवं कर्मचारियों को नयी सोच और दिशा के साथ अद्वितीय नेतृत्व प्रदान किया जिसने धानुका एग्रीटेक लिमिटेड को लगातार दो वर्षो तक फोर्ब्स पत्रिका की सफल 500 कंपनियों में स्थान दिया और 1980 की एक छोटी सी शुरुआत को आज 600 करोड़ की कंपनी के रूप में स्थापित किया. कंपनी ने अप्रेल 2013 में सदी के महानायक श्री अमिताभ बच्चन को अपना ब्रांड एम्बेसेडर बनाया जिसके तहक वे कंपनी के विभिन्न उत्पादों का मीडिया में प्रचार करते नज़र आयेंगे.ठये श्री अग्रवाल एवं श्री धानुका के सपनो की एव; सफल उड़ान ही तो हे.'

जयदीप माथुर

गुणवत्ता घटिया एनएसईएल के गोदामों में रखे ऊन की

स्विस कंपनी एसजीएस ने द्वारा नैशनल स्पॉट एक्सचेंज (एनएसईएल) में जमा सामानों की जांच के दौरान मात्रा में भारी कमी की बात कही थी, लेकिन अब नीलामी प्रक्रिया में यह बात सामने आई है कि इस माल की गुणवत्ता भी घटिया है। कच्चे ऊन के भंडार को यदि नीलामी में श्रेष्ठ कीमतों पर भी बेचा जाता है तो भी इससे सिर्फ 5.17 करोड़ रुपये की रकम प्राप्त होगी जबकि बकाया रकम 730 करोड़ रुपये है। नीलामी प्रक्रिया से नजदीकी से जुड़े एक अधिकारी ने कहा, 'एआरके लुधियाना के गोदामों में रखे कच्चे ऊन के स्टॉक राजस्थान का है जो बाजार में लगभग 29 रुपये प्रति किलोग्राम पर बिक रहा है जबकि एनएसईएल के अनुबंध निर्देशों के अनुसार यह आस्ट्रेलियन का ऊन होना चाहिए और इसकी कीमत 700 रुपये प्रति किलोग्राम पर होनी चाहिए।ळ उन्होंने कहा, 'एनएसईएल में श्रेष्ठद्नन्न बोली कीमत 21 रुपये पर तय की गई थी जो मूल वैल्यू का महज 3 फीसदी है।ळ एनएसईएल के प्रवक्ता ने एक ईमेल जवाब में कहा, 'जहां तक ऊन के मुद्दे की बात है तो इस पर जांच चल रही है।ळ गुणवत्ता में अंतर का पता एसजीएस को सौंपी गई प्रगति रिपोर्ट में चला है जिसमें मात्रा में 75-80 फीसदी की कमी की बात कही गई थी। २६ जुलाई की रिपोर्ट में एनएसईएल के भंडार की स्थिति के अनुसार लुधियाना स्थित एआरके इम्पोटद्नन्र्स द्वारा प्रबंधित गोदामों में उपलब्ध कच्चे ऊन का स्टॉक 11,190 टन था। इस स्टॉक के अनुरूप एक्सचेंज पर ओपन इंटरेस्ट पोजीशन बनी थी। जो पूरे देश के कुल सालाना उत्पादन के बराबर था

मूँगफली कि खेती के लिए उपयोगी.लैन्डक्रुजर और सुरक्षा

जोधपुर, तहसील फलौदी रीडमलसर, गाँव दीप नगर के निवासी लाभू राम भम्बू ने सृष्टि एग्रो सवादाता को बताया की वो हिन्दकैम कॉपीरेशन के उत्पाद .लैन्डक्रुजर और सुरक्षा का प्रयोग विगत वषी से अपनी मूँगफली की खेती में करते रहे है! इस के प्रयोग से मूँगफली का उत्पादन तो बढ़ा ही है साथ ही साथ गुणवत्ता में भी बढोतरी हुयी है! और भंडारण क्षमता भी लंबे समय तक रही है! लाभू राम भम्बू अपने क्षेत्र के एक जागरूक किसान माने जाते है!

327 रुपये प्रति क्विंटल गन्ने की कीमत करने की मांग

किसानों के एक अग्रणी संगठन ने उत्तर प्रदेश चीनी उद्योग पर गन्ने की कीमतें नहीं बढ़ाने के लिए राज्य सरकार पर दबाव डालने का आरोप लगाया है। किसान जागृति मंच के अध्यक्ष सुधीर पंवार ने आरोप लगाया कि चीनी मिल मालिक राज्य सरकार से गन्ने की 240 रुपये प्रति क्विंटल कीमत पर अतिरिक्त सब्सिडी की मांग कर रहे हैं। उन्होंने उत्तर प्रदेश से गन्ने कीमतें पिछले साल के 280 रुपये प्रति क्विंटल के बजाय 327 रुपये प्रति क्विंटल करने की मांग की है। इनका कहना है कि ऐसा नहीं होने की स्थिति में वे मिलें नहीं चलाएंगे। पंवार ने बताया कि मिल मालिक हाल की गन्ना आरक्षण बैठक का भी बहिष्कार कर चुके है। चीनी मिल मालिक राज्य सरकार को पिछले साल का 2,400 करोड़ रुपये का बकाया देने में अपनी असमर्थता जाहिर कर चुके हैं। हाल में ही उत्तर प्रदेश चीनी मिल संघ (यूपीएसएमए) ने अखबारों में एक विज्ञापन प्रकाशित किया था, जिसमें चीनी उद्योग के बड़े संकट में होने और दयनीय आर्थिक हालत होने का दावा किया गया था। पंवार ने कहा, 'पिछले साल के मुकाबले कृषि लागत 20 प्रतिशत बढ़ चुकी है और किसानों को इसी आधार पर भुगतान होना चाहिए

टेक्स्मो पाइप

टेक्स्मो पाइप एंड प्रोडक्ट लिमिटेड पिछले पच्छीस वषी से पोलिमस बिज़नेस में है टेक्स्मो पाइप लिमिटेड कंपनी जो BSC ,नक्क में लिस्टेड कंपनी है टेक्स्मो पाइप के उत्पादनों में PVC PIPE ,HDP PIPE ,DRIP ERRIGATION SECTION HOS` पाइप एव PLUMBING ,SWR Deewj AGRI FITTING की विस्तृत रेंज हैं`

टेक्स्मो पाइप के सात राज्यों में 550 से भी अधिक को डिलर नेटवर्क है ,इसके अतिरिक्त टेक्स्मो के क्लिंट लिस्ट में बड़े बड़े कॉर्पोरेट भी है टेक्स्मो के द्वारा क्प्व्क पीपी एंड फिटिंग जिसका शुभारंभ इस महीने हो रहा है`इस पाइप की विशेषता ये है की गरम और ठन्डे पानी में HOO डिग्री YA -100 डिग्री तापमान में भी कार्यरत रहेता है।

दीपक फर्टिलायाजर्स

दीपक फर्टिलायाजर्स पुणे द्वारा 90 % डेन दर (पेस्टाईल) ' महाधन बेनसल्फ़ बाजार में उपलब्ध किया गया है`इसकी विशेषताएं यह है की इन्हाके उपयोग से मिटटी से कम से कम निकास होता है अन्य खाद के साथ मिलाकर देने में मिलावट असंभव है,साथ ही हाथो द्वारा इस्तेमाल करने में आसानी व सुरक्षित है पौधों में फफुन्दिजनक रोग प्रतिरोधक शक्ति बढाने में सक्षम है इससे किसानों को यह फायदा होगा की , तिलहन की फसलों में तेल की मात्र में 4.6 % वृद्धी, प्याज ,लहसुन सब्जियों की गुणवत्ता बढाने में सहायक साथ ही मिटटी का प.ह. मान सुधरता है

AVA कंपनी एक अग्रणिय कंपनी

AVA कंपनी राष्ट्रिय और अंतराष्ट्रिय एग्रो रसायन कंपनीओं को OEM प्रदायक सेवाए प्रधान कराती है उसी के साथ यह कंपनी कैल्शियम ,कोबाल्ट ,तांबे ,लोहा, मग्नेशियम ,मैगनीज ,निकेल ,सेलेनियम ,जस्ता यदि उत्पादनों में भी अग्रणी रही है कंपनी को रासायनिक व्यापर में EDTA प्रोफेशनल के रूप में ब्रांडेड किया गया है AVA कंपनी जो के कृषि उत्पादों में एक अग्रणी कंपनी है यह कंपनी चेलाटेद सुक्ष्मपोषक ,सुक्ष्मपोषक उर्वरकों ,चेलाटेद उर्वरकों और मृदा पोषक तत्वों बेहतर गुणवत्तो वाले उत्पादन बनाती है कंपनी राष्ट्रिय और अंतराष्ट्रिय एग्रो रसायन कंपनीओं को ध्ळं प्रदायक सेवाए प्रधान कराती है उसी के साथ यह कंपनी कैल्शियम ,कोबाल्ट ,तांबे ,लोहा, मग्नेशियम ,मैगनीज ,निकेल ,सेलेनियम ,जस्ता यदि उत्पादनों में भी अग्रणी रही है। कंपनी को रासायनिक व्यापर में 'EDTA प्रोफेशनल के रूप में ब्रांडेड किया गया है ।

राज्य

किसानो का मेला

हिसार .हिसार में लगने जा रहा है किसानो का मेला ,तीन दिन तक चलने वाले इस मेले में किसानो को लाभ पहुंचाने वाले उत्पाद दिखाई देंगे !इस मेले को विगत वषी में मिलने वाले प्रोत्साहन को देखते हुए बड़ी संख्या में किसानो की उपस्तिथि दर्ज कराने का अनुमान है !

खनन पर ऊहापोह

उत्तराखंड में दो दर्जन से अधिक नदियों में उपखनिज (रेत-बजरी व पत्थर) चुगान के लिए वन महकमे की हरी झंडी मिलना कुछ सुकून देने वाला है। यदि कोई किंतु-परंतु नहीं हुआ तो औपचारिकताएं पूरी होने के बाद इनमें अगले चार-पांच माह के भीतर चुगान भी शुरू हो जाएगा। लेकिन, सवाल यह कि जिन नदियों में एक अक्टूबर से चुगान शुरू होना था, उनमें यह प्रारंभ नहीं हो पाया है। वजह है खनन नीति के संबंध में स्थिति स्पष्ट न हो पाना। खनन नीति में निजी क्षेत्र के लिए दरवाजे खोलने और टेंडर के जरिए यह कार्य कराने की बात कही गई है। लेकिन, पूर्व से खनन कार्य करने वाली सरकारी एजेंसियों जीएमवीएन एवं केएमवीएन के साथ ही वन विकास निगम कर्मियों ने इस नीति का विरोध किया। बता दें कि राजस्व क्षेत्र में जीएमवीएन व केएमवीएन और आरक्षित वन क्षेत्रों में वन विकास निगम खनन कार्य करता आया है। इस बीच वन विकास निगम कर्मियों के विरोध प्रदर्शन के बाद शासन बैकफुट पर आया और पूर्व की भांति निगम को खनन कार्य करने के आदेश भी निर्गत किए। लेकिन, बाकी दोनों निगमों के संबंध में अभी तक स्थिति स्पष्ट नहीं हुई है।

अवैध गायें पकड़ी, पांच मृत मिलीं

होशियारपुर: बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने करतारपुर से गायों को अवैध रूप से बूचड़खाने में ले जा रहे एक ट्रक को पकड़ कर पुलिस के हवाले किया।

वहां गौशाला में जगह न होने के कारण गायों को होशियारपुर की गऊशाला में रखने के लिए लाया गया। यहां गायों को उतारते समय पांच मृत पाई गईं। करतार पुलिस ने दो आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

बजरंग दल के जिला प्रधान शेरे पंजाब ने बताया कि उन्हें रात करीब दस बजे सूचना मिली कि करतारपुर में जालंधर रोड पर गाय से भरा एक ट्रक खड़ा है। सूचना मिलते ही वह कार्यकर्ताओं के साथ करतारपुर पहुंच गए। करतारपुर से जालंधर की ओर गाय से भरा एक ट्रक जा रहा था। पीछा करने पर चालक व अन्य युवक ट्रक को छोड कर भाग गए। ट्रक की तलाशी लेने पर उसमें गायें मिलीं। इसके बाद इसकी सूचना करतारपुर पुलिस को दी गई।

आम के बाग से 185 पेड़ काटे!

विकासनगर: जस्सोवाला क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्ग किनारे आम के बाग से कुछ ही दिन में 185 फलदार पेड़ काटे जाने का मामला प्रकाश में आया है। इतनी बड़ी संख्या में पेड़ कटने के बाद भी वन विभाग के अधिकारियों के कान पर जूं तक नहीं रेंगी। दिल्ली-युमोनोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे कुछ दिन पहले तक हरा भरा आम का बाग था। इसमें 189 फलदार पेड़ बताए जाते हैं, जिनमें कोई भी पेड़ बीमार हालत में नहीं था। पिछले सीजन में इस बाग से दो लाख 40 हजार रुपये के आम बाजार में बेचे जाने की बात कही जा रही है, लेकिन राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे की भूमि पर विभागीय सांठ-गांठ से एक सप्ताह के भीतर पूरा बाग साफ कर दिया गया। मौके पर सिर्फ चार पेड़ ही बचे हैं।

पेड़ जल्द बड़े होंगे

रांची। 20 साल में पूर्ण रूप से विकसित होने नाम दिया गया है। वन विभाग की नर्सरी में सागवान के अलावा शीशम, गम्हार, आंवला और एकेसिया पर इसका सफल प्रयोग किया जा चुका है। इससे पेड़ लगाने वाले किसानों को बहुत बड़ा फायदा होगा। अब वृक्षारोपण को बढ़ावा मिलेगा सागवान अब महज 10 सालों में ही तैयार हो जाएगा। प्राकृतिक रूप से बढ़ने वाले पेड़ों को समय से पूर्व विकसित करने की तकनीक झारखंड के वन विभाग ने इजाद की है।

हरी खाद का प्रयोग कर खेती को उपजाऊ बनाएं

डा. वेद प्रकाश', डा. बी. एन. सिंह '', डा.जी.आर. सिंह '
नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद

देश की बढ़ती हुई आबादी को भोजन उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक है कि भूमि से लगातार उच्च तकनीकी द्वारा अधिक मात्रा में कृषि उत्पादन लिया जाय ऐसी स्थिति में भूमि की उर्वरा शक्ति बनाये रखना नितांत आवश्यक है। क्योंकि बिना उर्वरा शक्ति के उत्पादन का लक्ष्य प्राप्त करना आसान नहीं है ऐसी दशा में हरी खाद का प्रयोग अपरिहार्य है। देश में विगत कई वर्षों से लगातार रासायनिक खाद का प्रयोग करने से हम उत्पादन प्राप्त करने में सफल रहे हैं। परंतु भूमि की उर्वरा शक्ति में काफी हास हुआ है। हरी खाद के प्रयोग से मृदा कार्बनिक अंश तथा मृदा में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ जाती है। हरी खाद के रूप में फलीदार फसलों के उगाने से जड़ों में उगने वाली ग्रन्थियों में राइजोबियम जीवाणु वायुमंडल के नाइट्रोजन का योगिकीकरण करते हैं। हरी खाद में पाया जाने वाला कार्बनिक अंश जब मृदा में मिलता है तो जीव रासायनिक क्रिया में तीव्रता आ जाती है जो सूक्ष्म जीव तथा एजोटोबेक्टर की क्रियाशीलता भी बढ़ा देता है, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ जाती है। हरी खाद के वे पौधे जिनकी जड़े गहराई तक जाती हैं, मृदा के विभिन्न स्तरों से पोषक तत्व व जल दोनों ही लाने में सक्षम हैं।

हरी खाद के रूप में उगाई जाने वाली फसलें–

1. सनई– देश के अधिकतर भागों में हरी खाद के लिए सनई की फसल उगाई जाती है। सनई की फसल बहुत तेजी से बढ़ती है और 5–7 सप्ताह में 4–5 फुट ऊँची हो जाती है। पौधे जल्दी पककर कड़े नहीं होते जिससे मिट्टी में पलटने के बाद शीघ्र सड़कर खाद बन जाते हैं। सनई की 50–60 दिन की फसल से एक हेक्टेयर क्षेत्रफल से लगभग 20–25 टन हरी खाद मिल जाती है।

2. ढैंचा– हरी खाद की प्रमुख फसलों में सनई के बाद ढैंचा का प्रमुख स्थान है। यह फसल कम या अधिक वर्षा वाले स्थानों में जहां कि पानी भरा रहता हो और लवणीय या ऊसर भूमि वाले क्षेत्रों में भली भांति उग सकती है। इसमें सूखा व जल प्लावन सहन करने की अद्भुत क्षमता पायी जाती है। इसकी जल प्रणाली काफी सशक्त होती है। जड़ें काफी गहराई तक पहुंच कर नमी व पोषक तत्व ग्रहण करती हैं। धान में हरी खाद देने के लिए यह विशेष उपयुक्त पाया गया है। ऊसर में उग जाने के कारण इसका प्रयोग ऊसर सुधार में किया जाता है।

3. मूँग, उर्द, मोठ– इन सभी फसलों को खरीफ मौसम में उगाकर हरी अवस्था में ही खेत में पलटकर खाद के रूप में प्रयोग किया जाता है। गेहूँ के लिए मूँग टाइप–1 की हरी खाद अन्य फसलों की हरी खाद से अधिक लाभकारी होती है। यह कम अवधि वाली फसल है जो 60–70 दिन में पककर तैयार हो जाती है। मानसून आरम्भ होते ही इसे बो दिया जाय तो सितम्बर के प्रारम्भ होते ही इसकी फलिशं तोड़ने के पश्चात हरी अवस्था में पलटकर गेहूँ के लिए हरी खाद बनायी जा सकती है।

हरी खाद फसल की विशेषताएं–

1. ऐसी दलहनी फसल हो जो कम उपजाऊ भूमि में भी वायुमण्डलीय नाइट्रोजन का अधिकाधिक योगिकीकरण करने की क्षमता रखती हो अर्थात उसकी जड़ो में काफी संख्या में ग्रन्थियां हों।

सारिणी–1: हरी खाद की फसलों का रासायनिक संघटन तथा कार्बन नाइट्रोजन का अनुपात

फसल	नाइट्रोजन जैविक			कार्बन			कार्बन नाइट्रोजन अनुपात		
	30 दिन	45 दिन	60 दिन	30 दिन	45 दिन	60 दिन	30 दिन	45 दिन	60 दिन
सनई	2.54	2.08	1.72	41.0	44.27	45.27	16.3	22.3	26.6
ढैंचा	2.60	2.34	1.61	44.28	47.52	47.15	14.4	20.6	25.0
बरसीम	3.65	3.32	2.67	41.58	43.82	44.45	12.0	13.1	14.6
मूँग	3.47	2.87	2.68	40.33	42.66	44.18	12.2	15.1	16.7
मंसूर	3.32	3.03	2.65	42.51	43.12	44.36	12.7	13.1	15.3

2.फसल शीघ्र बढ़ने वाली हो ताकि जल्दी ही पलटी जा सके।
3.फसल गहरी जड़ वाली हो जो भूमि की निचली सतह से पोषक तत्वों को ले सकें।
4.हरी खाद वाली फसल समस्याग्रस्त भूमि और जलवायु में भी हरे पदार्थ की अच्छी उपज दे सके।
5.फसल की प्रारम्भिक वृद्धि के दौरान प्रचुर पत्तियां तथा कोमल टहनियां निकले ताकि प्रति इकाई क्षेत्रफल से अधिकाधिक कार्बनिक पदार्थ मिल सके।

बोआई का समय–

हरी खाद की फसल की बोआई मानसून आरम्भ होने से पूर्व ही कर देनी चाहिए क्योंकि वर्षा से पूर्व यदि फसल पलटने के लिए तैयार हो जाती है तो धान की रोपाई में विलम्ब नही होता है तथा फसल को सड़ने में प्रयाप्त समय मिल जाता है। इसलिए इसकी बुवाई का उपयुक्त समय मई का प्रथम सप्ताह है। परंतु ऐसे क्षेत्र जहां धान की फसल खरीफ में नही लेना है हरी खाद के बाद रबी की फसल लेनी है। वहां पर वर्षा प्रारम्भ होने पर अथवा जुलाई के प्रथम सप्ताह में बोआई करना चाहिए।

कृषि क्रियाएं–

हरी खाद वाली फसलों की बोआई के लिए खेत की विशेष तैयारी की आवश्यकता नहीं पड़ती। बीजों में अंकुरण के लिए उचित मात्रा में नमी का होना नितांत आवश्यक है।

उर्वरकों के प्रयोग से हरी खाद की क्षमता में वृद्धि–

विशिष्ट मिट्टी में हरी खाद के लिए उगायी गयी दलहनी फसल की वृद्धि कितनी होती है और वह नाईट्रोजन का योगिकीकरण करने में कितनी सक्षम है यह इस बात पर निर्भर है कि इस मिट्टी में फास्फोरस, कैल्सियम, मालिब्डिनम जैसे तत्व कितनी मात्रा में उपलब्ध हैं। यदि इनकी प्रयाप्त मात्रा मिट्टी में नहीं है तो फसल की पर्याप्त वृद्धि के लिए इन तत्वों को ऊपर से डाला जाना आवश्यक होता है और फसल द्वारा मिट्टी से अवशोषित यह तत्व विघटन के बाद फिर अगली फसल को सुगमतापूर्वक उपलब्ध हो जाते हैं।

सारिणी–2: मिट्टी में दबाते समय हरी खाद वाली फसल की आयु एवं विघटन की अवधि का धान की उपज पर प्रभाव

ढैंचा की आयु (दिनों में)	डपचार विघटन की अवधि (दिनों में)	हरी खाद द्वारा नाइट्रोजन की कुल प्रति (किग्रा./हे.)	धान की उपज (कु0/हे0)
45	0	78	56.3
45	10	74	56.9
45	20	64	43.9
55	0	12.3	56.6
55	10	16	50.7
55	20	124	51.6
65	0	162	61.8
65	10	120	57.4
65	20	140	49.3

स्रोत–उर्वरक और खाद, काशीनाथ तिवारी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

हरी खाद की फसल की खेत में पलटाई–

हरी खाद की विभिन्न फसलों पर भारत में किए गए परीक्षणों से पता चला है कि साधारणतया फूल बनने के समय इनकी पलटाई की जानी चाहिए। अधिकतर हरी खाद की फसलों में बोआई से लेकर 45–60 दिन के अंदर फूल आने लगते हैं। करनाल में किए गए परीक्षणों से पता चला है कि हरी खाद वाली फसल ढैंचा को 45, 55 और 65 दिन आयु की अलग–अलग अवस्थाओं में पलटाई कर दबाने के बाद धान की उपज पर कोई विशेष अंतर नहीं पाया गया है परंतु विघटन की अवधि बढ़ाने से धान की उपज में कमी हुई।

हरी खाद वाली फसलों की पलटाई उस समय करनी चाहिए जब उसमें हरे मुलायम पदार्थ की मात्रा अधिक हो। सामान्य हल्की भूमि में हरी खाद वाली फसल को अधिक गहराई तक दबाना चाहिए। जबकि भारी मिट्टी में कम गहराई तक दबाना चाहिए। सूखे खेत में हरी खाद की फसल को पाटा चलाकर गिराने के बाद मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करके उसे मिट्टी में दबा देते हैं। खेत की जुताई हमेशा उसी दिशा में करनी चाहिए जिस दिशा में फसल गिराई गई है।

सारिणी–3: परती और ढ़ैंचा की हरी खाद देने का धान की उपज पर प्रभाव (उपज कुन्तल/हेक्टेयर)

उपचार नाइट्रोजन प्रयोग की दर (किग्रा./हे.)

	0	40	89	120	औसत
परती 1974	26.4	38.6	55.6	60.1	45.1
1975	34.1	42.7	58.7	63.5	46.7
औसत	30.2	40.6	57.1	61.8	47.4
हरी खाद 1974	56.4	63.1	73.0	77.1	67.5
1975	53.5	62.5	66.5	75.3	65.2
औसत	54.6	62.8	71.2	76.2	66.3

सारिणी–4: हरी खाद के लिए प्रयुक्त विभिन्न फसलों का गन्ने की उपज पर प्रभाव

उपचार	उपज (कुन्तल/हेक्टेयर)	नियंत्रित के ऊपर प्रतिशत वृद्धि
नियंत्रित	501	100
सनई	607	121
ढैंचा	574	115
ग्वार	565	113
लोबिया	622	124

हरी खाद प्रयोग के बाद मुख्य फसल की बोआई–

हरी खाद वाली फसल को कब खेत में पलटा जाय इस बात पर निर्भर करता है कि हरी खाद वाली फसल की प्रकृति क्या है साधारणतया हरी खाद के लिए उन्ही फसलों का चुनाव करना चाहिए जो कम समय में अधिक बढ़वार दें। धान फसल की रोपाई से 15 दिन पूर्व हरी खाद फसल की पलटाई करने से उनके विघटन के लिए काफी समय मिल जाता है। इसी प्रकार यदि खरीफ में हरी फसल के रूप में सनई, ढ़ैचा या उर्द उगाया गया है उस स्थिति रबी फसल की सभी फसलों की समय पर बुवाई की जा सकती है। क्योंकि हरी खाद फसलों के विघटन हेतु समय मिल जाता है।

सारिणी–5: मक्का, गेहूँ फसल चक्र में हरी खाद के लिए प्रयुक्त फसलों का उपज पर प्रभाव

नाइट्रोजन (किग्रा./हे.) मक्का की उपज (कुन्तल/हेक्टेयर) गेहूँ की उपज (कुन्तल/हेक्टेयर)

परती	ग्वार	ढैंचा	लोबिया	परती	ग्वार	ढैंचा	लोबिया	
50	21.6	24.4	22.2	26.3	45.3	46.8	48.1	48.5
75	22.7	26.6	25.1	31.7	46.2	48.5	42.7	50.1
100	24.3	31.3	29.0	33.6	45.6	46.1	46.6	51.5
125	25.3	23.3	31.6	36.2	45.3	50.3	51.3	51.7

फसलों पर हरी खाद का प्रभाव–

सेन्ट्रल सेलिनिटी रिसर्च इन्स्टीच्यूट, करनाल में हुए प्रयोगों से ज्ञात हुआ है कि क्षारीय भूमि में यदि ढ़ैंचा की हरी खाद का प्रयोग करने के बाद धान की रोपाई की जाती है तो अत्यन्त लाभकारी प्रभाव धान की फसल पर देखा गया है। हरी खाद की प्रयोग की दशा में धान की फसल में नाइट्रोजन की आधी मात्रा कम की जा सकती है। इसलिए धान, गेहूँ या धान वाले अन्य द्विफसली चक्रों में हरी खाद का प्रयोग करके अधिक लाभ अर्जित किया जा सकता है।

सारिणी–6: हरी खाद वाली दलहनी फसलों द्वारा प्राप्त नाइट्रोजन की मात्रा

हरी खाद की फसल	नाइट्रोजन की मात्रा (किग्रा./हे.)	हरी खाद की फसल	नाइट्रोजन की मात्रा (किग्रा./हे.)
सनई	110	ग्वार	60
सेंजी	80	लोबिया	55
ढ़ैंचा	55	मूंग	40

शुष्क क्षैत्र में कददूवर्गीय सब्जियों का समेकित कीट प्रबन्धन

श्रवण एम हलधर, बी. आर. चौधरी एवं सुरेश कुमार

कददूवर्गीय सब्जियों को मानव आहार का एक अभिन्न भाग माना जाता है. एक आदमी को रोजाना 300 ग्राम सब्जियां खानी चाहिए परंतु भारत मे इसका 1/9 भाग ही मिल पाता है. भारत दुनिया में सब्जी उत्पादन मे दूसरा सबसे बड़ा देश है और चीन का पहला स्थान है. सब्जियां विटामिन और खनिज लवणों का समृद्ध स्रोत होते हैं. सब्जी उत्पादन में कीडों से बहुत नुकसान होता है. भारत मे कीडों, रोगों, सुत्रकृमियों एवं खरपतवारों से 30% तक नुकसान होता है. कददूवर्गीय सब्जियों में लगने वाले कीट निम्नलिखित है:

मुख्य कीट

1. फल मक्खी:
वैज्ञानिक नाम: बैक्ट्रोसेरा (डैक्स) कुकुरबिटी
कुल: टैफरीटीडी
गण: डीपटैरा

पौषक पौधे: फल मक्खी का आक्रमण सभी कद्दू कुल के पौधो मे होता है जैसे लौकी, करेला, तोरई, कद्दू, ककडी, खरबूज, खीरा, टिंडा आदि.
आर्थिक क्षति एवं नुकसान: इस फल मक्खी के व्यस्क के पंख भूरे रंग के होते है. इस कीट का मैगट ही क्षति पहुंचाता है. इसका प्रकोप फरवरी से लेकर नवम्बर तक होता है. मादा फल मक्खी अपने अंडरोपक को कोमल फलों मे धँसाकर गुदे मे अण्डे देती है. ग्रसित फल के छेद से लसदार हल्के भुरे रंग का द्रव निकलता है. अण्डे से मैगट निकलते है जोकि गूदे को खाकर उसमें स्पंज, जैसे बहुत से छेद कर देते है ओर फल सडने लगता है.
कददूवर्गीय फल मक्खी का व्यस्क व शंकु टिंडे मे फल मक्खी से नुकसान
फुट ककडी मे फल मक्खी से नुकसान घीया (लौकी) मे फल मक्खी से नुकसान
तोरई(स्पोंजगार्ड) मे फल मक्खी से नुकसान काचरी मे फल मक्खी से नुकसान
खरबूजें मे फल मक्खी से नुकसान मतीरें मे फल मक्खी से नुकसान

2. कद्दू का लाल कीड़ा:
वैज्ञानिक नाम: रैफिडोपालपा फोवीकोलीस
कुल: क्राइजोमेलिडी
गण: कोलियोप्टेरा

इसकी भारत मे मुख्तया: तीन प्रजातियां पाई जाती है. इनमें से आर. फोवीकोलीस भारत के लगभग सभी राज्यों में पायी जाती है. आर. लैवीसी प्रजाति उत्तरी राज्यों में अधिक मात्रा में पाई जाती है. और दक्षिण भारत मे आर. सिंकटा अधिक होती है.
पौषक पौधे: इस लाल कीडे का आक्रमण सभी कद्दू कुल के पौधो मे होता है जैसे लौकी, करेला, तोरई, कद्दू, ककडी, खरबूज, खीरा, टिंडा आदि.
आर्थिक क्षति एवं नुकसान: इस कीडे का व्यस्क एवं ग्रब दोनो नुकसान पहुचाते है. भृंग (व्यस्क) पत्तियों एवं फूलों को नुकसान पहुचाता है और ग्रब पौधे की जडों को खाता है. जो फल जमीन पर रखे होते है उनको इस ग्रब के द्वारा निचले भाग मे छिद्र करके काफी संख्या मे प्रवेश कर जाते है तथा अंदर से खोखला कर देते है.
कद्दू का लाल कीडा (रैफिडोपालपा फोवीकोलीस)

3. हाडा बीटल:
वैज्ञानिक नाम: हैनोसेपीलेक्ना विजींटिओपंकटाटा
कुल: कोक्सीनेलीडी
गण: कोलियोप्टेरा

पौषक पौधे: यह दक्षिण पूर्व एशिया के विभिन्न भागों में पाया जाता है. यह बैंगन का महत्वपूर्ण कीट माना जाता है, इससे क्षति करीब-करीब सभी सब्जियों मे होती है. जैसे बैंगन, आलु, टमाटर, लौकी, करेला, तोरई, कद्दू, ककडी, खरबूज, खीरा, टिंडा आदि.
आर्थिक क्षति एवं नुकसान: हाडा बीटल के व्यस्क एवं ग्रब दोनो पौधे को नुकसान पहुचाते है. यह एक विशेष तरीके से पत्तियों एवं फलों को कुरेदता है और धीरे धीरे पत्तियों एवं फलों को सुखा देता है.
ग्रब से नुकसान हाडा बीटल से नुकसान

4.पत्ती भेदक सुंडी:
वैज्ञानिक नाम: डाईफेनिया इंडिका
कुल: पाईरिलिडी
गण: लेपिडोप्टेरा

पौषक पौधे: खीरा, लौकी, करेला, सेम, अरहर, तरबूज, खरबूज, टिंडा, ककडी, कद्दू, लोबिया आदि.
आर्थिक क्षति एवं नुकसान: इस कीट की सुंडी ही पौधे की पत्तियों को नुकसान करती हैं. अंडे सें निकलने के बाद सुंडी रेशमी धागे के साथ पत्तियों को रोल करती है और सिराओं के बीच से पत्ती को खाती है. इस कीट की सुंडी फूल एवं फलों को भी नुकसान पहुंचाती है. नुकसान किये हुये फल बाद में सडने लगते है.

सुण्डी से नुकसान व्यस्क सुण्डी
ब. लघुपद कीट
1. सफेद मक्खी:
वैज्ञानिक नाम: बैमेसीया टेबेसाई
कुल: एल्यूरोडिडी
गण: हेमिप्टेरा

पौषक पौधे: इस कीट के मुख्य पौषक पौधे कपास, तंबाकू, टमाटर और कददूवर्गीय सब्जियां आदि है.
आर्थिक क्षति एवं नुकसान: सफेद मक्खी की प्रकोप पत्तियों के निचली सतह पर सिराओं के बीच में होता है और यह पत्तियो से रस चूसती है. इस कीट का शुष्क मौसम के दौरान प्रकोप अधिक होता है और गतिविधि बारिश की शुरुआत के साथ घटती जाती है. इसके प्रभाव से पौधे की पत्तियां पीली पड जाती हैं, पत्ते सिकुडे और नीचे की ओर मुड जाते हैं. सफेद मक्खी वायरस रोग का संचारण करती है.
सफेद मक्खी के अण्डे सफेद मक्खी के निम्फ व्यस्क सफेद मक्खी

2. लीफ माइनर:
वैज्ञानिक नाम: लिरियोमाइजा ट्राईफोलाइ
कुल: एग्रोमाइजीडी
गण: डिप्टेरा

पौषक पौधे: इस कीडे का आक्रमण सभी कद्दू कुल के पौधो मे होता है जैसे लौकी, करेला, तोरई, कद्दू, ककडी, खरबूजा, खीरा, टिंडा आदि.
आर्थिक क्षति एवं नुकसान: यह पत्तियों के ऊपरी भाग पर टेढे मेढे भूरे रंग की सुरंग बना देता है ओर इसका मैगट ही पत्तियों को नुकसान पहुचाता है.
मेगट से नुकसान व्यस्क लीफ माइनर

3. चेपा:
वैज्ञानिक नाम: एफीस गोसीपी
कुल: एफीडिडी
गण: हेमिप्टेरा

पौषक पौधे: इस कीट के मुख्य पौषक पौधे कपास, तंबाकू, टमाटर और कददूवर्गीय सब्जियां है. आर्थिक क्षति एवं नुकसान: इसके निम्फ व व्यस्क दोनों पत्तियों को नुकसान पहुचाते है. ये छोटे आकार के काले एवं हरे रंग के होते हैं तथा कोमल पत्तियों, पुष्पकलिकों का रस चूसते हैं.
व्यस्क चेपा निम्फ व व्यस्क से नुकसान

स. समेकित कीट प्रबन्धन:
सब्जियों में आईपीएम का महत्व ओर बढ़ जाता है क्योंकि फल और सब्जी मनुष्य द्वारा खाई जाती है। जो कीटनाशक ज्यादा ज़हरीले होते हैं या अपने ज़हरीले असर के लिए जाने जाते हैं उनकी सिफारिश नहीं की जानी चाहिए। किसान ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए कीटनाशकों के असर को खत्म होने के लिय समय नहीं देते और जल्द ही फसल को बाजार में बेच देते हैं। इस वजह से कीटनाशकों का ज़हर उनमें बाकी रह जाता है, कभी कभी इस वजह से मौत तक हो जाती है। इसलिए सब्जियों में कीटनाशकों का प्रयोग करते हुए हमें ज्यादा सावधानी बरतनी चाहिए। समेकित कीट प्रबंधन (आई. पी. एम.) का उपयोग फलों में 1940 के बाद किया गया. इससे पहले 1800 से 1940 तक कीट प्रबंधन के लिए तेल, साबुन, रेंजिस, पौधों से प्राप्त जहरीले पदार्थ एवं अकार्बनिक योगिकों का उपयोग होता था. १९४० के बाद सिंथेटिक व्यापक कीटनाशकों का प्रयोग होने लगा और इनका बार- बार अनुप्रयोग होने से कीटों में कीटनाशकों के प्रति प्रतिरोधकता विकसित होने लगी. इस प्रकार कीटों मे प्रतिरोधकता होने से ज्यादा कीटनाशकों का अनुप्रयोग होने लगा, जिससे वातावरण खराब होने लगा और कीटों के प्राकृतिक शत्रु नष्ट होने लगे. इन सब घटकों से बचाने के लिय समेकित कीट प्रबंधन (आई. पी. एम.) की कददूवर्गीय सब्जियों में आवश्यकता पडी.
समेकित कीट प्रबंधन (आई. पी. एम.) क्या है:
यह कीट प्रबंधन की वह विधी है जिसमें कि सम्बधित पर्यावरण तथा विभिन्न कीट प्रजातियों के जीवन चक्र को संज्ञान में रखते हुए सभी उपयुक्त तकनीकों एवं उपायों का समन्वित उपयोग किया जाता है, ताकि हानिकारक कीटों का स्तर आर्थिक नुकसान के स्तर के नीचे बना रहे.
आई. पी. एम. के उद्देश्य:
न्यूनतम लागत के साथ-साथ अधिकतम फसल उत्पादन.
मिट्टी, पानी व वायु में कीटनाशकों की वजह से न्यूनतम प्रदूषण.
पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण एवं पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखना.
इस प्रबंधन के अंदर निम्नलिखित घटक आते है: फल को पेपर या प्लास्टिक से ढकना, खेत की सफाई करना, प्रोटीन बैट और क्यू-आकर्षण ट्रैप, कीट प्रतिरोधक पौधे, जैविक नियंत्रण और कम विषैले कीटनाशकों आदि का उपयोग कीट को नुकसन के आर्थिक स्थर से नीचे रखने के लिये किया जाता है.

1. फल को पैपर या प्लास्टिक से ढकना:
पौधे के फलो को 2-3 दिन के अंतराल पर दो परत पैपर या प्लास्टिक से बांधना चाहिय जिससे की फल मक्खी अपने अण्डे फलों पर नहीं दे पाती है. इस प्रबंधन से 40-58% तक फलों को नुकसान होने से बचाया जा सकता है. इस प्रबंधन का उपयोग कददूवर्गीय फसलों जैसे तरबूज, खरबूज, ककडी, लौकी, तोरई, कददू आदि मे किया जाता है.

2. खेत की सफाई करना:
कीटों के प्रबंधन में सबसे प्रभावी तरीका खेत की सफाई करना होता है. फल मक्खी, चितकबरी सुंडी, लाल कद्दू बीटल, हाडा बीटल आदि के प्रजनन चक्र और जनसंख्या वृद्धि को तोडने के लिये गर्मी के दिनो मे खैत की गहरी जुताई करनी चाहिये. पौधों और फलों के क्षतिग्रस्त भागों को हटा देना चाहिए और नष्ट कर देना चाहिए.

3. क्यू-आकर्षण ट्रैप:
क्यू-आकर्षण ट्रैप फल मक्खी के प्रबंधन मे प्रभाशाली है. क्यू-आकर्षण ट्रैप नर को आकर्षित करती है और इसके अंदर कीटनाशक रखा जाता है जिसके द्वारा नर मर जाता है और मादा संभोग करने के लिये नर नहीं मिलता है. इस प्रकार से इन कीडों का प्रबंधन कर सकते है.
विभिन्न प्रकार के क्यू-लुर: 1) फलाईसीड ऍ 20%, ऊगेलुर S@ 8%, क्यू-लुर 85%+ नैल्ड, क्यू-लुर 85%+ डाव्जिनोन, क्यू-लुर 95%+ नैल्ड आदि बाजार मे उपलब्ध हैं और इनको फल मक्खी को नियंत्रित करने मे प्रभावी पाया गया है. २) खेत में रात के समय प्रकाश के ट्रैप लगायें तथा उनके नीचे किसी बर्तन में चिपकने वाला पदार्थ जैसे सीरा अथवा गुड का घोल भर कर रखे।

"दुधारू पशुओं को अगोला खिलाने में सावधानी एवं लाभ"

डा0 विद्या सागर', डा0 रवि प्रकाश मौर्य'' एवं डा0 कौशल कुमार मौर्य'''

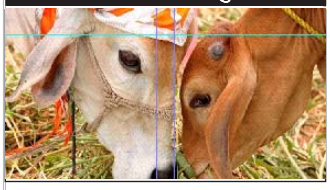

देशं की हरित क्रान्ति में पशुओं का प्रमुख योगदान रहा है, जिनके कारण हम अन्न उत्पादन में आत्मनिर्भर हो सके हैं। यद्यपि दुग्ध उत्पादन में भी हमारा देश आज विश्व में प्रथम स्थान पर है। परन्तु हमारे हैं। पशुओं का प्रतिदिन दुग्ध उत्पादन, अपेक्षाकृत काफी कम है। इसका एक प्रमुख कारण है कि हम पशुओं को पर्याप्त मात्रा में दाना, हरा चारा, यहां तक कि सूखा चारा भी नही दे पाते हैं। पशुओंके लिए आहार की इस कमी को दूर करने के लिए आवश्यक है कि किसान भाई गैर–परम्परागत एवं स्थानीय उपलब्ध कृषि

सह–उत्पादों को पशुओं को खिलाने में उपयोग करे।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि गन्ना हमारे घ्छ्ह की एक प्रमुख फसल है। लगभग 40 लाख हेक्टेयर भूमि में गन्ने की खेती की जाती है, जिससे प्रति वर्ष लगभग 30 करोड़ टन गन्ना पैदा होता है। गन्ने से चीनी के साथ–साथ हमें अनेक सह–उत्पाद भी मिलते हैं, जिनमें अगोला (15–20 प्रतिघ्श्त), खोई (30–35 प्रतिघ्त), शीरा (4–4.5 प्रतिघत),

सूखी पत्तियाँ (10 प्रतिघत) व मैली (2.5–3.5 प्रतिघ्त) इत्यादि प्रमुख हैं। इस प्रकार गन्ने के सह–उत्पादों के रूप में हमें प्रति वर्ष लगभग 5–5.5 करोड़ टन अगोला, 9–10 करोड़ टन खोई, 12–13 करोड़ टन शीरा 03 करोड़ टन सूखी पत्ती व लगभग 01 करोड़ टन मैली उपलब्ध हो जाती है।

इसमें से अगोला तथा सूखी पत्तियाँ तो किसानों के पास ही रहती हैं। अतः यह दोनो ही सह–उत्पाद पशुओं के आहार में आसानी से प्रयोग किये जा सकते हैं। हैं।

MANUFACTURER AND BULK SUPPLIER OF FERTILIZERS PRODUCTS

UDIT OVERSEAS PVT. LTD.

137, INDUSTRIAL AREA DEHRA, TEHSIL-CHOMU, DISTT. JAIPUR

Products Range:-

- Micronutrients
- Mixture
- Secondary Nutrients
- Growth Promoters
- Bio Stimulants
- Bio Fungicide
- Bio Insecticide
- Bactericide
- Wetting Agent
- Zyme
- Tonic

WE WELCOME YOUR INQUIRY

CONTACT DETAIL

MR. ALOK BENIWAL

MOB: 9660258447

बकरी पालन

खेती में पशुपालन एक महत्वपूर्ण अवयव के रूप में हमेशा से उपयोगी रहा है। सूखे के क्षेत्र में इसका महत्व

और बढ़ जाता है और उसमें भी बकरी पालन सूखे की दृष्टिकोण व छोटे किसानों के लिहाज से काफी प्रभावी है क्योंकि इसमें लागत कम होने के साथ ही साथ आजीविका के विकल्प भी बढ़ जाते हैं।

परिचय

खेती और पशु दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं। उत्तर प्रदेश की आजीविका इन्हीं दो के इर्द-गिर्द अधिकांशत: घूमती रहती है। खेती कम होने की दशा में लोगों की आजीविका का मुख्य साधन पशुपालन हो जाता है। गरीब की गाय के नाम से मशहूर बकरी हमेशा ही आजीविका के सुरक्षित स्रोत के रूप में पहचानी जाती रही है। बकरी छोटा जानवर होने के कारण इसके रख-रखाव का खर्च भी न्यूनतम होता है। सूखे के दौरान भी इसके खाने का इंतज़ाम आसानी से हो सकता है, इसके साज-संभाल का कार्य महिलाएं एवं बच्चे भी कर सकते हैं और साथ ही आवश्यकता पड़ने पर इसे आसानी से बेचकर अपनी जरूरत भी पूरी की जा सकती है। बुंदेलखंड क्षेत्र में अधिकतर लघु एवं सीमांत किसान होने के कारण यहां पर सभी परिवार एक या दो जानवर अवश्य पालते हैं, ताकि उनके लिए दूध की व्यवस्था होती रहे। इनमें गाय, भैंस, बकरी आदि होती हैं। विगत कुछ वर्षों सें पड़ रहे सूखे की वजह से और बड़े जानवरों के लिए चारा आदि की व्यवस्था करना एक मुश्किल कार्य होने के कारण लोग बकरी पालन को अधिक तरजीह दे रहे है। जंगल एवं बीहड़ के किनारे बसे गाँवों के लिए यह एक उपयुक्त एवं आसानी से हो सकने वाली आजीविका है, क्योंकि जंगलों में चराकर ही इनको पाला जा सकता है और गरीब परिवारों की रोजी-रोटी आसानी से चल सकती है। इस प्रकार बकरी पालन सूखाग्रस्त क्षेत्रों के लिए एक मुफीद स्रोत है।

नस्लें

वैसे तो बकरी की जमुनापारी, बरबरी एवं ब्लेक बंगाल इत्यादि नस्लें होती हैं। लेकिन यहां पर लोग सूखा की स्थिति में देशी एवं बरबरी नस्ल की बकरियों का पालन करते हैं, जिनकी देख-रेख आसानी से हो जाती है।

प्रक्रिया

बकरी को पालने के लिए अलग से किसी आश्रय स्थल की आश्यकता नहीं पड़ती। उन्हें अपने घर पर ही रखते हैं। बड़े पैमाने पर यदि बकरी पालन का कार्य किया जाए, तब उसके लिए अलग से बाड़ा बनाने की आवश्यकता पड़ती है। बुंदेलखंड क्षेत्र में अधिकतर लोग खेती किसानी के साथ बकरी पालन का कार्य करते हैं। ऐसी स्थिति में ये बकरियां खेतों और जंगलों में घूम-फिर कर अपना भोजन आसानी से प्राप्त कर लेती है। अत: इनके लिए अलग से दाना-भूसा आदि की व्यवस्था बहुत न्यून मात्रा में करनी पड़ती है।

यह उल्लेखनीय है कि देशी बकरियों के अलावा यदि बरबरी, जमुनापारी इत्यादि नस्ल की बकरियां होंगी तो उनके लिए दाना, भूसी, चारा की व्यवस्था करनी पड़ती है, पर वह भी सस्ते में हो जाता है। दो से पांच बकरी तक एक परिवार बिना किसी अतिरिक्त व्यवस्था के आसानी से पाल लेता है। घर की महिलाएं बकरी की देख-रेख करती हैं और खाने के बाद बचे जूठन से इनके भूसा की सानी कर दी जाती है। ऊपर से थोड़ा बेझर का दाना मिलाने से इनका खाना स्वादिष्ट हो जाता है। बकरियों के रहने के लिए साफ-सुथरी एवं सूखी जगह की आवश्यकता होती है।

प्रजनन क्षमता

एक बकरी लगभग डेढ़ वर्ष की अवस्था में बच्चा देने की स्थिति में आ जाती है और 6-7 माह में बच्चा देती है। प्राय: एक बकरी एक बार में दो से तीन बच्चा देती है और एक साल में दो बार बच्चा देने से इनकी संख्या में वृद्धि होती है। बच्चे को एक वर्ष तक पालने के बाद ही बेचते हैं।

बकरियों में प्रमुख रोग

देशी बकरियों में मुख्यत: मुंहपका, खुरपका, पेट के कीड़ों के साथ-साथ खुजली की बीमारियाँ होती हैं। ये बीमारियाँ प्राय: बरसात के मौसम में होती हैं।

उपचार

बकरियों में रोग का प्रसार आसानी से और तेजी से होता है। अत: रोग के लक्षण दिखते ही इन्हें तुरंत पशु डाक्टर से दिखाना चाहिए। कभी-कभी देशी उपचार से भी रोग ठीक हो जाते हैं।

बकरी पालन हेतु सावधानियां

बीहड़ क्षेत्र में बकरी पालन करते समय निम्न सावधानियां बरतनी पड़ती हैं-

आबादी क्षेत्र जंगल से सटे होने के कारण जंगली जानवरों का भय बना रहता है, क्योंकि बकरी जिस जगह पर रहती है, वहां उसकी महक आती है और उस महक को सूंघकर जंगली जानवर गांव की तरफ आने लगते हैं।

बकरी के छोटे बच्चों को कुत्तों से बचाकर रखना पड़ता है।

बकरी एक ऐसा जानवर है, जो फ़सलों को अधिक नुकसान पहुँचाती है। इसलिए खेत में फसल होने की स्थिति में विशेष

रखवाली करनी पड़ती है। वरना खेत खाने के चक्कर में आपसी दुश्मनी भी बढ़ने लगती है।

बकरी पालन में समस्याएं

हालांकि बकरी गरीब की गाय होती है, फिर भी इसके पालन में कई दिक्कतें भी आती हैं -

बरसात के मौसम में बकरी की देख-भाल करना सबसे कठिन होता है। क्योंकि बकरी गीले स्थान पर बैठती नहीं है और उसी समय इनमें रोग भी बहुत अधिक होता है।

बकरी का दूध पौष्टिक होने के बावजूद उसमें महक आने के कारण कोई उसे खरीदना नहीं चाहता। इसलिए उसका कोई मूल्य नहीं मिल पाता है।

बकरी को रोज़ाना चराने के लिए ले जाना पड़ता है। इसलिए एक व्यक्ति को उसी की देख-रेख के लिए रहना पड़ता है।

फायदे

सूखा प्रभावित क्षेत्र में खेती के साथ आसानी से किया जा सकने वाला यह एक कम लागत का अच्छा व्यवसाय है, जिससे मोटे तौर पर निम्न लाभ होते हैं-

जरूरत के समय बकरियों को बेचकर आसानी से नकद पैसा प्राप्त किया जा सकता है।

इस व्यवसाय को करने के लिए किसी प्रकार के तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता नहीं पड़ती।

यह व्यवसाय बहुत तेजी से फैलता है। इसलिए यह व्यवसाय कम लागत में अधिक मुनाफा देना वाला है।

इनके लिए बाजार स्थानीय स्तर पर ही उपलब्ध है। अधिकतर व्यवसायी गांव से ही आकर बकरी-बकरे को खरीदकर ले जाते हैं।

घर के पिछवाड़े में पाले जाने वाली नस्लें

कारी निर्भीक (एसील क्रॉस)

एसील का शाब्दिक अर्थ वास्तविक या विशुद्ध है। एसील को अपनी तीक्ष्णता, शक्ति, मैजेस्टिक गेट या कुत्ते से लड़ने की गुणवत्ता के लिए जाना जाता है। इस देसी नस्ल को एसील नाम इसलिए दिया गया क्योंकि इसमें लड़ाई की पैतृक गुणवत्ता होती है।

इस महत्वपूर्ण नस्ल का गृह आंध्र प्रदेश माना जाता है। यद्यपि, इस नस्ल के बेहतर नमूने बहुत मुश्किल से मिलते हैं। इन्हें शौकीन लोगों और पूरे देश में मुर्गे की लड़ाई-शो से जुड़े हुए लोगों द्वारा पाला जाता है। एसील अपने आप में विशाल शरीर और अच्छी बनावट तथा उत्कृष्ट शरीर रचना वाला होता है।

इसका मानक वजन मुर्गों के मामले में 3 से 4 किलो ग्राम तथा मुगिर्यों के मामले में 2 से 3 किलो ग्राम होता है।

यौन परिपक्वता की आयु (दिन) 196 दिन है।

वार्षिक अंडा उत्पादन (संख्या)- 92

40 सप्ताह में अंडों का वजन (ग्राम)- 50

कारी श्यामा (कडाकानाथ क्रॉस)

इसे स्थानीय रूप से 'कालामासी' नाम से जाना जाता है जिसका अर्थ काले मांस (फ़्लैश) वाला मुर्गा है। मध्य प्रदेश के झाबुआ और धार जिले तथा राजस्थान और गुजरात के निकटवर्ती जिले जो लगभग 800 वर्ग मील में फैला हुआ है, इन क्षेत्रों को इस नस्ल का मूल गृह माना गया है।

इनका पालन ज्यादातर जनजातीय, आदिवासी तथा ग्रामीण निर्धनों द्वारा किया जाता है। इसे पवित्र पक्षी के रूप में माना जाता है और दीवाली के बाद इसे देवी के लिए बलिदान देने वाला माना जाता है।

पुराने मुर्गे का रंग नीले से काले के बीच होता है जिसमें पीठ पर गहरी धारियां होती हैं।

इस नस्ल का मांस काला और देखने में विकर्षक (रीपल्सिव) होता है, इसे सिर्फ स्वाद के लिए ही नहीं बल्कि औषधीय गुणवत्ता के लिए भी जाना जाता है।

कडाकनाथ के रक्त का उपयोग आदिवासियों द्वारा मानव के गंभीर रोगों के उपचार में कामोत्तेजक के रूप में इसके मांस का उपयोग किया जाता है।

इसका मांस और अंडे प्रोटीन (मांस में 25-47 प्रतिशत) तथा लौह एक प्रचुर स्रोत माना जाता है।

20 सप्ताह में शरीर वजन (ग्राम)- 920

यौन परिपक्वता में आयु (दिन)- 180

वार्षिक अंडा उत्पादन (संख्या)- 105

40 सप्ताह में अंडे का वजन (ग्राम)- 49

जनन क्षमता (प्रतिशत)- 55

हैचेबिल्टी एफ ई एस (प्रतिशत)- 52

हितकारी (नैक्ड नैक क्रॉस)

नैक्ड नैक परस्पर बड़े शरीर के साथ-साथ लम्बी गोलीय गर्दन वाला होता है। जैसे इसके नाम से पता लगता है कि पक्षी की गर्दन पूरी नंगी या गालथैली (क्रॉप) के ऊपर गर्दन के सामने पंखों के सिर्फ टफ दिखाई देते हैं।

इसके फलस्वरूप इनकी नंगी चमड़ी लाल हो जाती है विशेषरूप से नर में यह उस समय होता है जब ये यौन परिपक्वतारूपी कामुकता में होते है।

केरल का त्रिवेन्द्रम क्षेत्र नैक्ड नैक का मूल आवास माना जाता है।

20 सप्ताह में शरीर का वजन (ग्राम)- 1005

यौन परिपक्वता में आयु (दिन)- 201

वार्षिक अंडा उत्पादन (संख्या)- 99

40 सप्ताह में अंडे का वजन (ग्राम)- 54

जनन क्षमता (प्रतिशत)- 66

हैचेबिल्टी एफ ई एम (प्रतिशत)- 71

उपकारी (फ्रिजल क्रॉस)

यह विशिष्ट मुरदार-खोर (स्कैवइजिंग) प्रकार का पक्षी है जो अपने मूल नस्ल आधार में विकसित होता है। यह महत्वपूर्ण देसी मुर्गे की तरह लगता है जिसमें बेहतर उपोष्ण अनुकूलता तथा रोग प्रतिरोधिता, अपवर्जन वृद्धि तथा उत्पादन निष्पादन शामिल है। घर का पिछवाड़ा मुर्गी पालन के लिए उपयुक्त है।

उपकारी पक्षियों की चार किस्में उपलब्ध हैं जो विभिन्न कृषि मौसम स्थितियों के लिए अनुकूल है।

काडाकनाथ - देहलम रैड
असील " - देहलम रैड
नैक्ड नैक - देहलम रैड
फ्रिजल "- देहलम रैड

निष्पादन रूपरेखा

यौन परिपक्वता की आयु 170-180 दिन

वार्षिक अंडा उत्पादन १65-180 अंडे

अंडे का आकार 52-55 ग्राम

अंडे का रंग भूरा होता है

अंडे की गुणवत्ता, उत्कृष्ट आंतरिक गुणवत्ता

95 प्रतिशत से ज्यादा सहनीय

स्वभाविक प्रतिक्रिया तथा बेहतर चारा

लेयर

ब्रायलर

कोयल

गिनी कुक्कुट / गिनी मुर्गा

टर्की

कुक्कुट पालन परियोजना निदेशालय, हैदराबाद द्वारा विकसित नस्लें

कर्नाटक पशुचिकित्सा एवं मात्स्यिकी विज्ञान विश्वविद्यालय, बंगलोर द्वारा विकसित नस्लें

अन्य देसी नस्लें

नस्लें	गृह क्षेत्र
अंकलेश्वर	गुजरात
एसील	आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश
बुसरा	गुजरात और महाराष्ट्र
चिट्टागोंग	मेघालय और त्रिपुरा
पगंनकी	आंध्र प्रदेश
दाओथीगिर	असोम
धागुस	आंध्र प्रदेश और कर्नाटक
हरिनघाटा ब्लैक	पश्चिम बंगाल
काडाकनाथ	मध्य प्रदेश
कालास्थी	आंध्र प्रदेश
कश्मीर फेवीरोल्ला	जम्मू व कश्मीर
मिरी	असोम
निकोबारी	अंडमान एवं निकोबार
पंजाब ब्राउन	पंजाब व हरियाणा
टेल्लीचेरी	केरल

मवेशियों के नस्ल व उनका चुनाव

दुधारू नस्ल

सहिवाल

मुख्यतः पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, बिहार व मध्य प्रदेश में पाया जाता है।

दुग्ध उत्पादन- ग्रामीण स्थितियों में 1350 किलोग्राम

व्यावसायिक फार्म की स्थिति में- 2100 किलो ग्राम

प्रथम प्रजनन की उम्र - 32-36 महीने

प्रजनन की अवधि में अंतराल - 15 महीने

गीर

दक्षिण काठियावाड के गीर जंगलों में पाये जाते हैं।

दुग्ध उत्पादन- ग्रामीण स्थितियों में- 900 किलोग्राम

व्यावसायिक फार्म की स्थिति में- 1600 किलोग्राम

थारपकर

मुख्यतः जोधपुर, कच्छ व जैसलमेर में पाये जाते हैं

दुग्ध उत्पादन- ग्रामीण स्थितियों में- 1660 किलोग्राम

व्यावसायिक फार्म की स्थिति में- 2500 किलोग्राम

करन फ्राइ

करण फ्राइ का विकास राजस्थान में पाई जाने वाली थारपारकर नस्ल की गाय को होल्स्टीन फ्रीज़ियन नस्ल के सांड के वीर्याधान द्वारा किया गया। यद्यपि थारपारकर गाय की दुग्ध उत्पादकता औसत होती है, लेकिन गर्म और आर्द्र जलवायु को सहन करने की अपनी क्षमता के कारण वे भारतीय पशुपालकों के लिए महत्वपूर्ण होती हैं।

नस्ल की खूबियां

इस नस्ल की गायों के शरीर, ललाट और पूंछ पर काले और सफेद धब्बे होते हैं। थन का रंग गहरा होता है और उभरी हुई दुग्ध शिराओं वाले स्तनाग्र पर सफेद चित्तियां होती हैं। करन फ्राइ गायें बहुत ही सीधी होती हैं। इसके मादा बच्चे नर बच्चों की तुलना में जल्दी वयस्क होते हैं और 32-34 महीने की उम्र में ही गर्भधारण की क्षमता प्राप्त कर लेते हैं।

गर्भावधि 280 दिनों की होती है। एक बार बच्चे देने के बाद 3-4 महीनों में यह पुन: गर्भधारण कर सकती है। इस मामले में यह स्थानीय नस्ल की गायों की तुलना में अधिक लाभकारी सिद्ध होती हैं क्योंकि वे प्राय: बच्चे देने के 5-6 महीने बाद ही दुबारा गर्भधारण कर सकती हैं।

करन फ्राइ नस्ल की गायें साल भर में लगभग 3000 से 3400 लीटर तक दूध देने की क्षमता रखती हैं। संस्थान के फार्म में इन गायों की औसत दुग्ध उत्पादन क्षमता 3700 लीटर होती है, जिसमें वसा की मात्रा 4.2% होती है। इनके दूध उत्पादन की अवधि साल में 320 दिन की होती है।

अच्छी तरह और पर्याप्त मात्रा में हरा चारा और संतुलित सांद्र मिश्रित आहार उपलब्ध होने पर इस नस्ल की गायें प्रतिदिन 15-20 लीटर दूध देती हैं। दूध का उत्पादन बच्चे देने के 3-4 महीने की अवधि के दौरान प्रतिदिन 25-30 लीटर तक होता है।

उच्च दुग्ध उत्पादन क्षमता के कारण ऐसी गायों में थन का संक्रमण अधिक होता है और साथ ही उनमें खनिज पदार्थों की भी कमी पाई जाती है। समय पर पता चल जाने से ऐसे संक्रमणों का इलाज आसानी से हो जाता है।

बछड़े की कीमत : तुरंत ब्यायी हुई गाय की कीमत दूध देने की इसकी क्षमता के अनुसार 20,000 रुपये से 25,000 रुपए तक हो सकती है।

लाल सिंधी

मुख्यतः पंजाब, हरियाणा, कर्नाटक, तमिल नाडु, केरल व उडीसा में पाये जाते हैं।

दुग्ध उत्पादन- ग्रामीण स्थितियों में- 1100 किलोग्राम

व्यावसायिक फार्म की स्थिति में- 1900 किलोग्राम

दुधारू व जुताई कार्य में प्रयुक्त नस्ल

ओन्गोले

मुख्यतः आन्ध्र प्रदेश के नेल्लोर कृष्णा, गोदावरी व गुन्टूर जिलों में मिलते है।

दुग्ध उत्पादन- 1500 किलोग्राम बैल शक्तिशाली होते है व बैलगाडी ख़ींचने व भारी हल चलाने के काम में उपयोगी होते है।

बीजोपचार : बीजोत्पादन में अहम भूमिका

सोनी कुमारी, अतुल कुमार, ईश्वर सिंह सोलंकी, कुन्दन कमार जायसवाल
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, पूसा (बिहार)

जिस प्रकार प्रकृति में हरियाली का होना बहुत महत्व रखता हैं, ठीक उसी तरह किसान भाइयों के लिए खेती में उन्नत बीज का होना महत्व रखता है। चूकि, एक स्वस्थ बीज ही स्वस्थ पौधे का उचित निर्माण करता है।

हमारा देश कृषि प्रधान देश हैं, जिनमें छोटे किसानों की संख्या ज्यादा है। जिनके पास छोटे–छोटे खेत है और प्रायः खेती ही उनके जीवन–यापन का प्रमुख साधन है। आधुनिक समय मे खाधान्न की मांग बढ़ती जा रही है तथा आपूर्ति के संसाधन घट रहे है। जिससे पौद्योगिकी चुनौतीपूर्ण की अपेक्षा ज्यादा जटिल हो गयी है। विज्ञान के नवीन उपकरणों, तकनीकों, तरीकों तथा प्रयोगों से किसानों की स्थिति मे सुधार हुआ है, तथा नवीन तकनीकों के प्रयोग करने से उनकी जीवन शैली में तीव्र बदलाव आये है। इसी को ध्यान में रखते हुए किसान नई–नई तकनीकों का उपयोग करके उत्पादन तथा उत्पादकता को बढ़ा सकते है। इन्ही मे से एक तकनीक बीचोपचार है। जिसको सुनियोजित तरीके से अपनाने से खेती की उत्पादकता बढ़ सकती है।

यह एक सस्ती तथा सरल तकनीक है, जिससे किसान भाई बीज जनित एवं मृदा जनित रोगों से अपनी फसल को खराब होने से बचा सकते हैं। इस तरीके में बीज को बोने से पहले फफूंदनाशी या जीवाणुनाशी या परजीवियों का उपयोग करके उपचारित करते हैं। भारत एक उष्ण कटिबंधीय प्रदेश है। उष्ण प्रदेश होने के कारण यहाँ रोगों एवं कीटों का प्रकोप अधिक होता है, जिससे की उपज को बहुत अधिक नुकसान होता है। उन्नत प्रजातियों के प्रयोग, पर्याप्त उर्वरक देने व सिंचाई के अतिरिक्त यदि पौध संरक्षण के उचित उपाय न किये जाये तो फसल की अधिकतम उपज नही मिल सकती है।

बीजोपचार : बीजोपचार में प्रायः बीज को खेतों में बोने से पहले अथवा उसके भंडारण से पहले बीजों को बीजजनित या मृदाजनित रोगों से सुरक्षा के लिए भौतिक, रासायनिक, यांत्रिक एवं जैविक नियंत्रक की उचित मात्रा से बीजों को उपचारित किया जाता है। बीजो को उचित रसायन या जैव नियंत्रक की उचित मात्रा में कुछ इस तरह मिलाया जाए, ताकि बीजों के उपर रसायन या जैविक नियंत्रक की सुरक्षात्मक परत चढ़ जाये जो कि बीजो को रोगी कारको से उचित संरक्षण कर स्वस्थ एवं पुष्ट पौधे का निर्माण कर सके।

बीजोपचार के निम्न उद्येश्य हैं : फसलों के उत्पादन में रोग बहुत हानिकारक होते है। बीज अनेक प्रकार के रोग जनक जैसे कि फफूंद, जीवाणु, विषाणु इत्यादि के वाहक होते हैं। जो खेतों में बुआई के समय या उसके भंडारण के समय फसलों को नुकसान पहुँचाते है। जिससे फसलों की उपज में तो कमी आ ही जाती है, बीज की गुणवत्ता पर भी बुरे प्रभाव पड़ते हैं। कई रोगों के कारक बीज के अन्दर, उसकी सतह पर, या उसके साथ रहकर बीजो को रोगी बीज के क्रम में रख देते है। इसलिए फसल की समुचित पैदावार एवं मुनाफे के लिए निरोग एवं स्वस्थ बीज का चुनाव करना बहुत आवश्यक है। मुलतः "स्वस्थ बीज ही स्वस्थ पौधे का निर्माण करता है"। अतः बीजों की बुआई से पहले उचित रसायन या जैविक नियंत्रक की निर्धारित मात्रा से बीचोपचार कर हम एक उन्नत पौधें का निर्माण कर सकते है। इसके साथ–साथ अनके बीजजनित एवं मृदा जनित रोगों से बीजो को बचाकर उन्नत एवं स्वस्थ बीज निर्माण कर किसान भाइयों को खुशहाली का आधार प्रदान कर सकते है।

बीजोपचारित करने के लिए निम्नलिखित विधियाँ है :

1. राईजोबियम कल्चर से बीजोपचार : इस विधि में खरीफ की पाँच मुख्य फसलों (अरहर, उड़द, मूँग, सोयाबीन एवं मूँगफली), तथा रबी की तीन दलहनी फसलें (चना, मसूर तथा मटर) में राईजोबियम कल्चर से बीजोपचारित कर सकते हैं। 100 ग्राम कल्चर आधा एकड़ जमीन में बोये जाने वाले बीजों को उपचारित करने के लिए प्रर्याप्त होता है। इस विधि में आधा लीटर पानी में लगभग 100 ग्राम गुड़ डाल लेते है तथा खूब उबाल लेते है। ठण्डा होने पर एक पैकेट कल्चर डालकर अच्छी तरह मिला लेते है। इस कल्चरयुक्त घोल के साथ बीजों को इस तरह मिलाते है, कि बीजों पर कल्चर की एक परत चढ़ जाए। उपचारित बीजों को छाया में सुखा कर यथाशीघ्र बुआई करते हैं।
2. सूर्यताप द्वारा बीजोपचार : यह विधि गेहूँ, जौ एवं जई जिनमें अनावृत कंडवा रोग लगता है, के नियंत्रण के लिए लाभदायक है। इस विधि में बीज को पानी में कुछ समय (3–4 घंटे) के लिए भिगोते हैं और फिर सूर्यताप में 4 घंटे तक रखते हैं बीज के आंतरिक भाग में रोगजनक का कवकजाल नष्ट हो जाता है। रोगजनक को नष्ट करने के लिए रोगजनक की सुषुप्तावस्था को तोड़ना होता है, जिससे रोगजनक नाजुक अवस्था में आ जाता है, जो कि सूर्य की गर्मी द्वारा नष्ट किया जा सकता है। यह विधि गर्मी के महीने (मई–जून) में कारगर सिद्ध हुई है।
3. भीगा बीजोपचार : इस विधि का उपयोग सब्जियों के बीजो के लिए ज्यादा फायदेमंद होता है। इस विधि में अनुशंसित मात्रा की दवा का पानी में घोल बना कर बीज को कुछ समय के लिए उसमें छोड़ देते हैं, तथा कुछ समय पश्चात् छायादार स्थान में 6–8 घंटे सुखाकर यथाशीघ्र बुआई करते हैं।
4. गर्म जल द्वारा बीजोपचार : यह विधि जीवाणु एवं विषाणुओं की रोकथाम के लिए ज्यादा लाभदायक है। इस विधि में बीज या बीज के रुप में प्रयोग होने वाले पादप भाग जैसे कंद को 52–540ब तापमान पर 15 मिनट तक रखते हैं। जिससे रोगजनक नष्ट हो जाते है, लेकिन बीज अंकुरण पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता है।
5. स्लरी बीजोपचार : यह विधि समय की बचत वाली विधि है। इस विधि से बीज बुआई के लिए जल्दी तैयार हो जाते है। इसमे अनुशंसित मात्रा की दवा के साथ थोड़ा पानी मिलाकर पेस्ट बना लेते है। इस पेस्ट को बीज में मिलाकर छाया में सुखा लेते है। सूखे हुए बीजो से यथाशीघ्र बुआई करते हैं। इस विधी द्वारा बीज कम समय में बुआई के लिए जल्दी तैयार हो जाते हैं।
6. सूखा बीजोपचार : इस विधि में बीज को अनुशंसित मात्रा की दवा के साथ सीड ड्रेसिंग ड्रम में डालकर अच्छी तरह हिलाते हैं, जिससे दवा का कुछ भाग प्रत्येक बीज पर चिपक जाए। सीड ड्रेसिंग ड्रम का उपयोग तब करते है, जब बीज की मात्रा ज्यादा होती है। अगर बीज सीमित मात्रा में है तो सीड ड्रेसिंग ड्रम के स्थान पर मट्टी के घड़े का प्रयोग कर सकते हैं। सीड ड्रेसिंग ड्रम या मिट्टी के घड़े में बीज की मात्रा दो तीहाई से ज्यादा नहीं रहनी चाहिए।
7. जीवाणु बीजोपचार : इस विधि मे सुक्ष्म परजीवीनाशी जैसे ट्राइकोड्रमा विरिडी, ट्राइकोड्रमा हारजिएनम, स्यूडोमोनास फ्लोरेसेंस इत्यादि का उपयोग करके बीज को उपचारित करते हैं।
8. पौधा/(बिचड़ा) उपचार : इस विधि द्वारा मुख्यतः धान, टमाटर, बैंगन, गोभी, मिर्च इत्यादि के पौधों को जीवाणु रोगों से बचाया जाता है। इस विधि में रोपाई से पहले पौधों की जड़ों को एंटीवायोटिक (एस्ट्रेप्टोसाईक्लिन) के घोल में डुबो कर उपचारित करते है।

बीजोपचारित करने की विधि :

बीज उपचारित करने के लिए सर्वप्रथम एफ0आई0आर0 क्रम याद रखना चाहिए। बीज को सर्वप्रथम फफूंदनाशी से उसके बाद कीटनाशी से (2 घंटे बाद) और अन्त में राईजोबियम कल्चर से (4 घंटे बाद) उपचारित करें। कवकनाशी, कीटनाशी तथा जैविक नियंत्रण क्रम गैर दलहनी फसलों पर लागू करनी चाहिए।

सावधानियाँ :

- बीज उपचारित करने के लिए निर्धारित मात्रा का ही प्रयोग करें।
- बीजोपचार करने के बाद बीज को छायेदार जगह में ही सुखाएं।
- रसायनों के प्रयोग से पहले उसकी एक्सपायरी तिथि अवश्य जॉच लें।
- उपचार के बाद डिब्बों तथा थैलों को मिट्टी के अंदर अवश्य दबा दें तथा अच्छी तरह साबुन से हाथ धो लें।
- रसायनों को बच्चों तथा मवेशियों की पहुंच से दूर रखें।
- रसायनों के प्रयोग के समय न तो कुछ खायें, न ही धूम्रपान करें।
- दवा को उसके मूल डिब्बे में रखें तथा उसका लेबिल खराब न होने दे। खाद्य, जल या शराब के डिब्बों में कीटनाशक रसायन को कभी न रखें।

निष्कर्ष :

- यह एक सस्ती तथा सरल विधि है।
- कोई भी किसान भाई बड़ी आसानी से इस विधि को अपना सकते हैं।
- रसायनिक पदार्थो का प्रयोग इस विधि में कम से कम होता है।
- बीजोपचार करने के बाद खड़ी फसल में सुरक्षा के अन्य उपायों की कम आवश्यकता पड़ती है।
- फसल उत्पादन में इस विधि द्वारा किसान भाईयों को 15–20 प्रतिशत तक मुनाफा मिलता है।

अतः आधुनिक संदर्भ में यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम किसान समुदाय के साथ अधिकाधिक रूप से संपर्क बनाए रखें। ताकि हमारे किसान भाईयों का प्रतिकूल परिस्थितियों में मनोबल बना रहें। जिससे हमारा देश न सिर्फ आत्मनिर्भर बना रहेगा बल्कि अपने पड़ोसी देशों के मुश्किल समय में मदद करने की स्थिति में भी रहेगा।

अतः इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि किसानो की खुशहाली मे उन्नत बीज का जितना अहम योगदान है उतना ही अहम योगदान बीजोपचार का भी हैं। अतः बीजोपचार बीजउत्पादन मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

उन्नत बीज : खुशहाल किसान **बीजोपचार : खुशहाली का आधार**

सरसों की बुवाई का उचित समय, बुआई विधि, बीज दर,उपचार, एवं जीवाणु खाद

डॉ. अशोक कुमार शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि प्रसार
सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर, राजस्थान

प्रश्न : सरसों की बुवाई किस समय तक की जा सकती है ताकि पैदावार में कोई नुकसान न हो ?

उत्तरः विभिन्न स्थानों पर बुवाई का समय, तापमान, मानसून समाप्ति की तिथि एवं फसल चक्र के अनुसार भिन्न हो सकता है। बोआई में देरी होने से उपज और तेल की मात्रा दोनों में कमी आती है। बुवाई का उचित समय किस्म के अनुसार सितम्बर मध्य से लेकर अक्टूबर अंत तक का है। अच्छे अंकुरण के लिए बुवाई के समय दिन का अधिकतम तापमान सामान्यतया औसतन 32–33 डिग्री सेल्सियस से अधिक नहीं होना चाहिए। इस इलाके में सरसों (लाहा) की बुवाई यदि किसी कारणवश नवंबर में की जाये तो देरी से बुवाई के लिए उपयुक्त किस्मों जैसे एन.आर.सी. एच.बी. 101, आशीर्वाद तथा स्वर्ण ज्योति का उपयोग करने से समुचित पैदावार मिल सकती है।

प्रश्न : सरसों की बुवाई के लिए बीज दर क्या रखनी चाहिए ?

उत्तरः बीज दर बुवाई के समय, किस्म एवं मिट्टी की नमी पर निर्भर करती है। पंक्ति में बोई गई सिंचित फसल के लिए बीज दर 4–5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर पर्याप्त होती है। बारानी, लवणीय अथवा क्षारीय क्षेत्रों में सिंचित क्षेत्रों की तुलना में 15 से 20 प्रतिशत अधिक बीज बोनी चाहिए ।

प्रश्नः सरसों फसल की बुआई किस विधि से की जाये।

उत्तरः ऐसा देखने में आया है कि कुछ किसान भाई जुताई किए गए खेत में बीज को बिखेरकर पाटा लगा देते है। लेकिन अनुसंधानों में यह पाया गया है कि सरसों की बुवाई पंक्तियों में 30 सेमी की दूरी पर करने से ही अधिक लाभ मिलता है। सरसों के बीज को हल के साथ लगे नाई या पोरा अथवा यांत्रिक सीड ड्रिलों द्वारा बोया जाना ही उपयुक्त है। पोरा द्वारा ड्रिल बुवाई के बाद पाटा नहीं फेरा जाता है, अन्यथा बीज अधिक गहराई में पहुंच जाता है। इस प्रकार की बुवाई से बीज की बुवाई दर, एवं बुवाई की गहराई का सही नियंत्रण हो जाता है। पंक्ति से पंक्ति की दूरी में एक समानता रहती है। निराई गुड़ाई आसानी से की जा सकती है और फसल को खरपतवारों से मुक्त रखा जा सकता है । इसलिए किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि वो पंक्त्यिों में ही बुआई करें।

बुवाई के समय कुछ सावधानियां

साथ ही बुवाई के समय कुछ सावधानियां बरतें कि बीज ड्रिल द्वारा डाले गए खाद के संपर्क में न आए, क्योंकि यह बीज के अंकुरण को प्रभावित करता है। इसके लिए बीज की बुवाई 3–5 से.मी. की गहराई पर की जानी चाहिए, जबकि खाद को 7–10 से.मी. गहराई में डालना चाहिए। कभी भी खेत में पानी भरा हुआ नहीं रहने देना चाहिए, क्योंकि इसका बीज जमने और पौधों की बढ़वार पर बुरा असर पड़ता है।

प्रश्न : सरसों फसल में भूमीगत कीटो का भी प्रकोप होता है । भूमिगत कीटों से फसल को बचाने के लिए क्या उपाय करना चाहिए ?

उत्तरः फसल को भूमिगत कीटों से बचाने के लिए भूमि उपचार आवश्यक है। क्यूनॉल्फोस (1.5 प्रतिशत) चूर्ण, 25 किग्रा प्रति हैक्टेयर की दर से आखिरी जुताई के समय मिट्टी मे मिलायें, इससे भूमिगत कीटों दीमक आदि से फसल का बचाव होगा। यदि फिर भी शुरू के एक महीने में भूमिगत कीटों का प्रकोप रहता है तो मेलाथियान 50 ई.सी. की 600 मिली. मात्रा को 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिडकाव करें। आवश्यकता पडने पर दुबारा छिडकाव करना चाहिए।

प्रश्न : सरसों की फसल को शुरू की अवस्था में रोगों से बचाने के लिए किन रसायनों से बीज उपचारित करना चाहिए ?

उत्तरः कार्बनड़ाजिम (बाविस्टिन) 2 ग्राम अथवा सफेद रोली प्रभावित क्षेत्रो में एप्रोन (एस डी 35) 6 ग्राम कवकनाशक दवाई प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करने से फसल पर लगने वाले रोगो' को काफी हद तक कम किया जा सकता है । मृदा जनित रोगों की रोकथाम के लिए बीज को ट्राइकोडर्मा नामक फफूँद से 6 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें

प्रश्न : आजकल जीवाणु खाद के बारे में काफी सुनते है । क्या सरसों के लिए भी कोई उपयोगी जीवाणु खाद हैं ? और उन्हे केसे सरसों की फसल मे उपयोग करें ?

उत्तर : सरसों फसल के लिए पोषक तत्वों की उपलब्धता बढाने में दो जीवाणु खाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं –एजोटोबैक्टर तथा फास्फोरस घोलक जीवाणु। एजोटोबैक्टर जीवाणु खाद वायुमंडलीय नत्रजन को परिवर्तित कर पौधों उपलब्धा कराते हैं। इसके प्रयोग से औसतन 10–15 किलोग्राम नत्रजन प्रति हैक्टेयर परिवर्तित होकर पौधों को उपलब्ध होती है। यह जीवाणु बीज के अंकुरण तथा पौधे की बढवार में सहायक होने के साथ–साथ भूमि में अनेकों रोगकारी कवकों की वृद्धि को नियंत्रित करता है। इस जीवाणु की मृत कोशिकाएँ भूमि में कार्बनिक पदार्थ में वृद्धि करते हैं।

फास्फोरस घोलक जीवाणु भूमि में अघुलनशील अवस्था में स्थित फास्फोरस को घुलनशील अवस्था में परिवर्तित कर पौधों के ग्रहण करने योग्य बनाते हैं जिससे फास्फोरस की उपलब्धता बढती है फलस्वरूप उत्पादन बढता है। इसके प्रयोग से औसतन 50 प्रतिशत तक फास्फेटिक खाद की बचत की जा सकती है। जीवाणु खाद से बीजोपचार के लिए प्रत्येक जीवाणु खाद के 50–50 ग्राम मिश्रण को आवश्यकतानुसार पानी में घोलकर एक हैक्टेयर के लिए आवश्यक बीजों में छाया में मिलाऐं। उपचारित बीज को 10 मिनट तक छाया में सुखाकर तुरंत बुवाई के काम में लेवें। यदि भूमि उपचार करना है तो इसके 4 किलोग्राम एजोटोबैक्टर तथा 4 किलोग्राम फास्फोरस घोलक जीवाणु के मिश्रण को 100–125 किलोग्राम पकी गोबर की खाद में छाया में समान रुप से मिलाकर अंतिम जुताई के पूर्व खेत में बिखेर कर मिला दें। इसके बाद तुरंत सिंचाई कर दें। फास्फोरस घोलक जीवाणु से बीजोपचार के लिए इसके 50 ग्राम मिश्रण को आवश्यकतानुसार पानी में घोलकर एक हैक्टेयर के लिए आवश्यक बीजों में छाया में मिलाऐं। उपचारित बीज को 10 मिनट तक छाया में सुखाकर तुरंत बुवाई के काम में लेवें। यदि भूमि उपचार करना है तो इसके 4 किग्रा मिश्रण को 125 किलोग्राम पकी गोबर की खाद में अच्छी तरह मिलाकर समान रुप से खेत में मिला दें। इसके बाद तुरंत सिंचाई कर दें।

जायद एवम् खरीफ सब्जियों में कीट प्रबन्धन

डा0एच0एम0 सिंह
प्राध्यापक
कीट विज्ञान विभाग
न0दे0 कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद

जायद एवम् खरीफ में लौकी, कद्दू, तरोई, करेला, परवल, लोबिया, भिण्डी एवं बैगन का प्रमुख स्थान है । इन सभी सब्जियों में विभिन्न प्रकार के कीटों का प्रकोप होता है जिसके कारण इनकी उपज एवं गुणवत्ता में कमी आ जाती है ऐसे फलों का बाजार में मूल्य भी काफी कम मिलता है । प्रस्तुत लेख में उपरोक्त सब्जियों में लगने वाले प्रमुख कीटों की पहचान एवं उनसे सुरक्षा पर संक्षिप्त प्रकाष डाला जा रहा है ।

कद्दू का लाल कीड़ा :

इस कीट का प्रकोप मुख्य रूप से कद्दू तरोई लौकी आदि पर होता है । प्रारम्भ में प्रौढ़ कीट पाले रंग का होता है जो बाद में लाल रंग में बदल जाता है । इसके षरीर का निचला भाग काले रंग का होता है । सॅूड़ी हल्के पाले रंग तथा भूरे सिर वाली होती है इस कीट के प्रौढ़ तथा सॅूड़ी दोनो ही हानि पहॅुचाते हैं ।

नियन्त्रण :

- फलों के अन्तिम तोड़ाई के बाद खेत की गहरी जुताई कर देने से अण्डे, सॅूड़ी तथा कृमि कोश सूर्य के प्रकाष एवं चिड़ियों द्वारा नश्ट कर दिये जाते हैं ।
- फसल के अवषेशों को नश्ट कर देना चाहिए ।
- सूर्य निकलने के पूर्व निश्क्रिय पौधों को हाथ के जाल से पकड़ कर नश्ट कर देना चाहिए
- अधिक प्रकोप होने पर कार्बेरिल 10 प्रतिषत धूल या फेनवेलेरेट 0.4 प्रतिषत धूल की 20 किग्रा0 मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव करना चाहिए या मैलाथियान 50 ई.सी. 2 मिलीलीटर या कार्बोसल्फयूरान 25 ई.सी. 1 मिलीलीटर या इन्डाक्साकार्ब 14.5 प्रतिषत 0.5 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए ।

प्लूम माथ :

दलहनी फसलों जैसे लोबिया, मटर, अरहर के अतिरिक्त इस कीट का प्रकोप लौकी पर बहुतायत से होता है । इस कीट का पतंगा सूखी घास के रंग का तथा गहरे कटे पंखों वाला होता है । इसकी सॅूड़ियॅा हरे, भूरे हरे रंग की षरीर पर दूर दूर बाल वाली होती है ।

यह बढ़ रही लताओं के सिरों पायी जाने वाली कोमल पत्तियों को तथा नये फलों को खुरच कर खाती हैं ।

नियन्त्रण :

- मैलाथियान 50 ई.सी. 2 मिलीलीटर या कार्बोसल्फयूरान 25 ई.सी. 1 मिलीलीटर या इन्डाक्साकार्ब 14.5 प्रतिषत 0.5 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए ।

लौकी का रस चूसक कीट :

यह कीट हरे रंग का होता है तथा लौकी की लताओं की फुनगी पर बन रही पत्तियों से रस चूसकर हानि पहॅुचाता है । रस चूसने के फलस्वरूप बढ़ने पर पत्तियॅा छिद्रयुक्त दिखाई पड़ती हैं तथा लता की बढ़वार रूक जाती है । नये फलों एवं फूलों से भी रस चूसकर उनकी बढ़वार को प्रभावित करते हैं ।

नियन्त्रण :

फल आने से पूर्व डाइमेथोएट 30 ई.सी. या मेथाइल ओ डेमेटान 20 ई.सी. 1.50 मिली0 या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 0.5 मिली0 या एसिटामिप्रिड 0.5 ग्रा0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करना चाहिए ।

फल आने के बाद कार्बरिल 50 प्रतिषत घुलनषील चूर्ण 2 ग्रा0, मैलाथियान 50 ई.सी. 2 मिलीलीटर या साइपरमेथ्रिन 10 ई.सी. 0.75 मिली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए ।

हड्डा बीटिल :

इस कीट का प्रकोप करेला, तरोई, बैगन, लौकी आदि पर होता है । इस कीट के प्रौढ़ एवं सूड़ियॅा हानिकारक होती हैं । इस कीट की तीन प्रजातियॅा पायी जाती हैं । प्रथम प्रजाति गहरे लाल रंग की तथा पंखों पर 7–14 काले गोल धब्बों युक्त होती है । इसे हेनोसेपिलेक्ना बिजिन्टीयाक्टोपंक्टाटा कहते हैं दूसरी प्रजाति गहरे तॉबे रंग की होती है तथा इसके पंख पर 6 धब्बे पाये जाते हैं इसे हेनोडोडीइसटिग्ना के नाम से जाना जाता है तीसरी प्रजाति द्वितीय प्रजाति के समान होती है परन्तु पंखों पर पाये जाने वाले धब्बों के बाहरी किनारों पर पीले रंग की रेखा पायी जाती है । तीनों प्रजातियों की सॅूड़ियॅा पीले रंग की होती हैं तथा षरीर पर 6 कतारों में कॅाटे पाये जाते हैं ।

नियन्त्रण :

पत्तियों के नीचे पाये जाने वाले प्रौढ़ पीले रंग के अण्डा, सूड़ियों एवं कृमिकोशों को खोज कर नश्ट कर देना चाहिए ।

एक प्रौढ़ प्रति वर्ग मीटर क्षेत्रफल पर दिखाई देने पर मैलाथियान 50 ई.सी. 2 मिलीलीटर या कार्बोसल्फयूरान 25 ई.सी. 1 मिलीलीटर या इन्डाक्साकार्ब 14.5 प्रतिषत 0.5 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए ।

फल मक्खीः

इस कीट का प्रकोप कद्दू, लौकी, तरोई, करेला, परवल आदि पर मुख्यरूप से होता है । इस कीट की सॅूड़ियॅा ही फसल को हानि पहॅूचाती हैं । मादा कीट फलों, फूलों कोमल लताओं आदि में पतले सफेद चावल जैसे अण्डे देती हैं । इन अण्डों से सॅूड़ियॅा निकलकर फलों/फूलों के ऊतकों को खाना प्रारम्भ कर देती हैं प्रकोपित फल टेढ़े मेढ़े हो जाते हैं । तने एवं फूलों पर प्रकोप होने पर सड़न हो जाती है ।

नियन्त्रण :

फलों के अन्तिम तोड़ाई के बाद खेत की गहरी जुताई कर देने से अण्डे, सॅूड़ी तथा कृमि कोश सूर्य के प्रकाष एवं चिड़ियों द्वारा नश्ट कर दिये जाते हैं ।

फल मक्खी से प्रकोपित फलों को एकत्र करके कैल्सियम कार्बोनेट या कीटनाशी युक्त गड्ढे में डालकर नष्ट कर देना चाहिए।

फल मक्खी के नियंत्रण के लिए क्यू ल्योर, इथाइल एल्कोहल, मैलाथियान 50 ई0सी0 के 4 : 6 : 1 में बने घोल में 5 X 5 X 1.2 वर्ग मिमी0 के प्लाइवुड के टुकड़ों को एक सप्ताह तक शोधित कर रक्षक/बोतल प्रपंच में लगाकर 10 से 12 स्थान पर लटकाना चाहिए।

हरा फुदकाः

इस कीट का प्रकोप मुख्यरूप से भिण्डी, लोबिया, बैगन आदि पर होता है इस कीट के हरे रंग के षिषु एव प्रौढ़ पत्तियों की उभरी हुई षिराओं के किनारों से रस चूसती हैं भिण्डी में इसके प्रकोप के फलस्वरूप पत्तियॅा मुड़ कर कटोरे के आकार की हो जाती हैं । बाद में किनारों से सूख कर गिर जाती हैं ।

नियन्त्रण :

2 से 3 कीट प्रति पत्ती होने पर फल आने से पूर्व डाइमेथोएट 30 ई.सी. या मेथाइल ओ डेमेटान 20 ई.सी. 1.50 मिली0 या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 0.5 मिली0 या एसिटामिप्रिड 0.5 ग्रा0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करना चाहिए । फल आने के बाद कार्बरिल 50 प्रतिषत घुलनषील चूर्ण 2 ग्रा0, मैलाथियान 50 ई.सी. 2 मिलीलीटर या साइपरमेथ्रिन 10 ई.सी. 0.75 मिली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए ।

भिण्डी का फल एवं चोटी बेधक :

यह भिण्डी का एक प्रमुख कीट है । इसकी मादा पौधों की चोटियों, कलिकाओं, फूलों एवं फलों पर अण्डे देती है । इन अण्डों से सूड़ियॅा निकलकर फल आने के पूर्व षाखाओं में छेद कर अन्दर घुस जाती हैं जिसके फलस्वरूप चोटी मुरझाकर सूख जाती है । कलिकाओं एवं फूलों पर प्रकोप होने से वे गिर जाते हैं तथा फल नहीं बनते । इनका प्रकोप फलों में भी होता है जिसके फलस्वरूप वे खाने के अयोग्य हो जाते हैं ।

नियन्त्रण :

सर्वेक्षण के लिए 5 तथा प्रबन्धन के लिए 15 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर की दर से लगाना चाहिए । अगल बगल के लिए अन्य पोशक पौधे जैसे जंगली कपास, हाली हाक आदि को नश्ट कर देना चाहिए । 5 प्रतिषत प्रकोपित पौधे देखते ही ट्राइकोग्रामा चिलोनिस को 50 हजार प्रति हेक्टेयर की दर से सप्ताह के अन्तराल पर 4 से 5 बार छोड़ना चाहिए । एनएसकेई 5 प्रतिषत घोल का सप्ताह के अन्तराल पर दो तीन छिड़काव करना चाहिए । या मैलाथियान 50 ई.सी. 2 मिलीलीटर या कार्बोसल्फयूरान 25 ई.सी. 1 मिलीलीटर या इन्डाक्साकार्ब 14.5 प्रतिषत 0.5 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए ।

बैगन का फल एवं तना बेधक :

इस कीट की गिडारे फसल को हानि पहॅूचाती हैं । प्रौढ़ कीट मध्यम आकार का एवं सफेद रंग का होता है । इसके बक्ष तथा उदर के ऊपरी भाग पर पीले भूरे अथवा काले रंग के धब्बे होते हैं । पंख सफेद रंग के तथा उन पर बड़े बड़े भूरे रंग के धब्बे होते हैं । मादा एकल रूप में अथवा 2 से 4 के समूह में पत्तियों के निचली सतह पर मक्खनी रंग के अण्डे देती है । इन अण्डों से सूड़ियॅा निकलकर फल आने के पूर्व षाखाओं में छेद कर अन्दर घुस जाती हैं जिसके फलस्वरूप चोटी मुरझाकर सूख जाती है । कलिकाओं एवं फूलों पर प्रकोप होने से वे गिर जाते हैं तथा फल नहीं बनते ।

हसंते रहो!!

१...टीचर: सच ओर वहम में क्या फ़र्क़ है ?
स्टूडेंट: आप जो हमें पढ़ा रही हैं वो सच है, लेकिन हम सब पढ़ रहे हैं ये आपका वहम हैह्ह्ह

२...पत्नी - नींद में तुम राजरानी ,राजरानी ,क्या बडबडा रहे थे ? आखिर यह राजरानी है कौन ?
पति - राजरानी ? ओह , यह वही घोडी है ,जो कल रेस में भाग लेने वाली हैं
पत्नी - तो फिर कल दो बार तुम्हारी उसी घोडी का फोन आया था

३....पत्नी अपने पति से बोली - रात को तुम सपने में मुझे गालियां दे रहे थे और मेरे मां-बाप को कोस रहे थे , क्यों ?
पति ने कहा- झूठ बोलती हो तुम ! मैं उस वक्त सोया ही नहीं था

श्री लक्ष्म्यष्टोत्तरशत सहस्त्रनामावली

श्री लक्ष्म्यष्टोत्तरशत सहस्त्रनामाव

ॐ प्रकृत्यै नमः । ॐ विकृत्यै नमः । ॐ विद्यायै नमः ।
ॐ सर्वभूतहितप्रदायै नमः । ॐ श्रद्धायै नमः । ॐ विभूत्यै नमः ।
ॐ सुरभ्यै नमः । ॐ परमात्मिकायै नमः । ॐ वाचे नमः ।
ॐ पद्मालयायै नमः । ॐ पद्मायै नमः । ॐ शुचये नम ।
ॐ स्वाहायै नमः । ॐ स्वधायै नमः । ॐ सुधायै नमः ।
ॐ धन्यायै नमः । ॐ हिरण्मय्यै नमः । ॐ लक्ष्म्यै नमः । ॐ नित्यपुष्टायै नमः ।
ॐ विभावर्यै र्नमः । ॐ अदित्यै नमः । ॐ दित्ये नमः । ॐ दीपायै नमः । ॐ वसुधायै नमः । ॐ वसुधारिण्यै नमः । ॐ कमलायै नमः । ॐ कान्तायै नमः । ॐ कामाक्ष्यै नमः ।
ॐ क्रोधसंभवायै नमः । ॐ अनुग्रहप्रदायै नमः । ॐ बुद्धये नमः । ॐ अनघायै नमः ।
ॐ हरिवल्लभायै नमः । ॐ अशोकायै नमः । ॐ अमृतायै नमः । ॐ दीप्तायै नमः ।
ॐ लोकशोकविनाशिन्यै नमः । ॐ धर्मनिलयायै नमः । ॐ करुणायै नमः ।
ॐ लोकमात्रे नमः । ॐ पद्मप्रियायै नमः । ॐ पद्महस्तायै नमः । ॐ पद्माक्ष्यै नमः ।
ॐ पद्मसुन्दर्यै र्नमः । ॐ पद्मोद्भवायै नमः । ॐ पद्ममुख्यै नमः । ॐ पद्मनाभप्रियायै नमः ।
ॐ रमायै नमः । ॐ पद्ममालाधरायै नमः । ॐ देव्यै नमः । ॐ पद्मिन्यै नमः ।
ॐ पद्मगन्धिन्यै नमः । ॐ पुण्यगन्धायै नमः । ॐ सुप्रसन्नायै नमः ।
ॐ प्रसादाभिमुख्यै नमः ।ॐ प्रभायै नमः । ॐ चन्द्रवदनायै नमः । ॐ चन्द्रायै नमः ।
ॐ चन्द्रसहोदर्यै र्नमः । ॐ चतुर्भुजायै नमः । ॐ चन्द्ररूपायै नमः । ॐ इन्दिरायै नमः ।
ॐ इन्दुशीतलायै नमः । ॐ आह्लादजनन्यै नमः । ॐ पुष्टयै नमः । ॐ शिवायै नमः ।
ॐ शिवकर्यै र्नमः । ॐ सत्यै नमः । ॐ विमलायै नमः । ॐ विश्वजनन्यै नमः ।
ॐ तुष्टयै नमः । ॐ दारिद्र्यनाशिन्यै नमः । ॐ प्रीतिपुष्करिण्यै नमः । ॐ शान्तायै नमः ।
ॐ शुक्लमाल्यांबरायै नमः । ॐ श्रियै नमः । ॐ भास्कर्यै र्नमः । ॐ बिल्वनिलयायै नमः ।
ॐ वरारोहायै नमः । ॐ यशस्विनयै नमः । ॐ वसुन्धरायै नमः । ॐ उदारांगायै नमः ।

ॐ हरिण्यै नमः । ॐ हेममालिन्यै नमः । ॐ धनधान्यकर्यै नमः । ॐ सिद्धये नमः ।
ॐ स्त्रैणसौम्यायै नमः । ॐ शुभप्रदाये नमः । ॐ नृपवेश्मगतानन्दायै नमः ।
ॐ वरलक्ष्म्यै नमः । ॐ वसुप्रदायै नमः । ॐ शुभायै नमः । ॐ हिरण्यप्राकारायै नमः ।
ॐ समुद्रतनयायै नमः । ॐ जयायै नमः । ॐ मंगळा देव्यै नमः ।
ॐ विष्णुवक्षस्स्थलस्थितायै नमः । ॐ विष्णुपत्न्यै नमः । ॐ प्रसन्नाक्ष्यै नमः ।
ॐ नारायणसमाश्रितायै नमः । ॐ दारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः । ॐ देव्यै नमः ।
ॐ सर्वोपद्रव वारिण्यै नमः । ॐ नवदुर्गायै नमः । ॐ महाकाल्यै नमः । ॐ ब्रह्माविष्णुशिवात्मिकायै नमः । ॐ त्रिकालज्ञानसंपन्नायै नमः । ॐ भुवनेश्वर्यै र्नमः ।।।
इति ्रीलक्ष्म्यष्टोत्तरशत सहस्त्रनामावली ।।

प महेंद्र दाधीच

पाक्षिक राशिफल

अक्टूबर - 2013 (15/10/2013 से 31/10/2013)

आपके नाम के प्रथम अक्षर से पाक्षिक फल

ज्योतिषाचार्य
पं.जयदत्त व्यास -जयपुर

AJS	राजकुल से लाभ, अधिक खर्च, शुभफल की प्राप्ति होगी।
BKT	स्त्री, पुत्र, धनलाभ, शान्तिपूर्ण समय
CLU	अनेक लोगों से सम्पर्क, विरोधियों पर विजय, आर्थिक लाभ का समय
DMV	कलह, धन नाश, बन्धु विरोध, स्त्री लाभ का समय
NEW	पेट सम्बन्धित रोग, मानसिक अशान्ति का समय रहेगा
FOX	स्वास्थ्य नरम, काम के प्रति अरुचि, शान्तिपूर्ण समय
GPY	धनहानि, लाभ कम व्यय अधिक होने का योग बनता है।
HQZ	भाई बन्धुओं से विरोध, एवं कष्टपूर्ण समय
IR	सम्मान, धन लाभ, मित्रों से सहयोग का समय रहेगा।

दीपावली : पांच दिवसीय जगमगाता पर्व
दीपोत्सव : दीपदान का है विशेष महत्व

दीपोत्सव के पावन अवसर पर हर तरफ खुशियों का महकता वातावरण हो जाता है। यह पर्व सभी पर्वों में सबसे बड़ा माना जाता है क्योंकि पांच दिन तक इस त्योहार की खुशियां बनी रहती है और माह भर पूर्व से इसे मनाने की तैयारी आरंभ हो जाती है। हर त्योहार की तरह इस पर्व की भी पौराणिक कथा है। हर दिन का विशेष महत्व है। आइए, जानते हैं पांच दिवसीय जगमगाते त्योहार की विशेषताएं :

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी

इसे 'धनतेरस' कहा जाता है। इस दिन चिकित्सक भगवान धन्वंतरी की भी पूजा करते हैं। पुराणों में कथा है कि समुद्र मंथन के समय धन्वंतरी सफेद अमृत कलश लेकर अवतरित हुए थे। धनतेरस को सायंकाल यमराज के लिए दीपदान करना चाहिए। इससे अकाल मृत्यु का नाश होता

है। लोग धनतेरस को नए बर्तन भी खरीदते हैं और धन की पूजा भी करते हैं।

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी

इसे 'नरक चतुर्दशी' या 'रूप चौदस' भी कहा जाता है। इस दिन नरक से डरने वाले मनुष्यों को चंद्रोदय के समय स्नान करना चाहिए व शुद्ध वस्त्र धारण करना चाहिए

कार्तिक कृष्ण अमावस्या

इसे दीपावली कहा जाता है। इस दिन महालक्ष्मी की पूजा की जाती है। साथ ही कुबेर की पूजा भी की जाती है। शुभ मुहूर्त में लक्ष्मीजी का पाना, सिक्का, तस्वीर अथवा श्रीयंत्र, धानी, बताशे, दीपक, पुतली, गन्ने, साल की धानी, कमल पुष्प, ॠतु फल आदि पूजन की सामग्री खरीदी जाती है। घरों में लक्ष्मी के नैवेद्य हेतु पकवान बनाए जाते हैं। शुभ मुहूर्त, गोधूलि बेला अथवा सिंह लग्न में लक्ष्मी का वैदिक या पौराणिक मंत्रों से पूजन किया जाता है।

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा

इसे गोवर्धन पूजा या अन्नकूट महोत्सव के रूप में मनाया जाता है। आज के दिन गाय-बछड़ों एवं बैलों की पूजा की जाती है। गाय-बछड़ादि को तरह-तरह से श्रृंगारित किया जाता है।

गोवर्धन पूजा के दिन महिलाएं शुभ मुहूर्त में घर आंगन में गोबर से गोवर्धन बनाकर कृष्ण सहित उनकी पूजा करती हैं

कार्तिक शुक्ल द्वितीया

इसे यम द्वितीया या भाई दूज कहा जाता है। इस दिन प्रातःकाल उठकर चंद्रमा के दर्शन करना चाहिए। यमुना के किनारे रहने वाले लोगों को यमुना में स्नान करना चाहिए। आज के दिन यमुना ने

यम को अपने घर भोजन करने बुलाया था, इसीलिए इसे यम द्वितीया कहा जाता है।

पर्यावरण की रक्षा को उच्च प्राथमिकता

हिन्दू धर्म में नीम, बेल, तुलसी, बरगद, पीपल, आंवला, आम आदि वृक्षों एवं पौधों को पूजा-अर्चना के साथ जोड़ा गया

है । ये वृक्ष औषधियों के निर्माण एवं पर्यावरण की रक्षा करने में अत्यधिक महत्त्व रखते हैं । वस्तुत: हिन्दुत्व में प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करने की चेष्टा की गयी है । सम्पूर्ण प्रकृति ही ईश्वर का शरीर है । इस प्रकार सूर्य, चन्द्रमा, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, नदी आदि को देवत्व प्रदान कर उनकी पूजा की जाती है

सृष्टी एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का नाम:..
संस्था का नाम:..
पूरा पता:...
ग्राम :..................................तहसील :...

जिला:...................................राज्य:...........................पिन कोड

दूरभाष कार्य:..............................निवास:...................................

सदस्यता राशि

एक वर्ष :151 तीन वर्ष :351 पांच वर्ष :501

कृपया हमें/मुझे सृष्टी एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/मनीओर्डर/चैक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूपये (अंकों में) शब्दों में :.................................
बैंक का नाम:............................... ड्राफ्ट चेक क्रमांक:......................दिनांक:................
स्थान:................................ प्रतिनिधि का नाम:......................हस्ताक्षर सदस्य:...............
दिनांक:......................

सृष्टी एग्रो

ग्रामिण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र
307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064. Tel: 022-66998360/61Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908.Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

मोहन थाल

मोहन थाल बेसन मावा और ड्रायफ्रूटस से बनने वाली एक पारम्परिक मिठाई है. कहा जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण जी को यह मिठाई बहुत प्रिय थी. इस मिठाई को बनाना बड़ा ही आसान है, तो आइये आज हम मोहन थाल मिठाई (र्श्दर्प्ह ऊर्प्ि ाम्ज) बनायें.

आवश्यक सामग्री

- बेसन - 100 ग्राम (एक कप)
- घी - 100 ग्राम (आधा कप)
- दूध - 2 टेबल स्पून
- ः चीनी - 100 ग्राम (आधा कप)
- मावा - 100 ग्राम (आधा कप)
- काजू - 10 (छोटे छोटे टुकड़े में काट लें)
- बादाम - 10 (बारीक काट लीजिये)
- पिस्ता - 15 (बारीक काट लीजिये)
- छोटी इलाइची - 5-6 (छील कर पीस लीजिये)

विधि

बाजार में बेसन दो तरह का आता है, एक बारीक पिसा हुआ और दूरा मोटा पिसा हुआ. मोहन थाल बनाने के लिये मोटा बेसन अच्छा रहता है.

किसी बर्तन में बेसन को छान लीजिये और २ छोटी चम्मच घी डालकर हाथ से अच्छी तरह मिला दीजिये, अब दूध डाल कर आटे जैसा गूथ लीजिये. ढककर 20 मिनिट के लिये रख दीजिये. इससे बेसन के कण फूल जाते हैं.

चीनी में, चीनी की मात्रा का आधा पानी (50 ग्राम) मिलाइये और 1 तार की चाशनी बना लीजिये, (थोड़ा सा बादाम और पिस्ता बचा लीजिये जो हम मिठाई के ऊपर डाल कर सजायेंगे). सभी मेवे और इलाइची इस चाशनी में डाल दीजिये.

भारी तले की कढ़ाई में घी डाल कर गरम कीजिये. गूथे हुये बेसन को घी में डाल कर भूनिये, घी से अच्छी महक आने लगे, जब वह हल्का भुना हो, तभी उसमें मावा मिला दीजिये और भूनिये. बेसन और मावा ब्राउन होने के बाद चाशनी मिलाइये, करीब 6-7 मिनिट तक पकाइये, किसी प्लेट या थाली को घी से चिकना कीजिये, मिश्रण को प्लेट में डाल कर एक सा फैला दीजिये. ऊपर से बारीक कटे हुये बादाम और पिस्ते डाल

दीजिये. (3-4 घंटे में यह मिश्रण जम जायेगा).

जमे हुए मिश्रण से अपने मन पसन्द आकार के पीस काटिये, मोहन थाल तैयार है. बहुत ही स्वादिष्ट मोहन थाल (Mohan Thal) बना है, सुबह शाम कभी भी खाइये. बचे हुये मोहन थाल को एअर टाइट कन्टेनर में भर कर फ्रिज में रख लीजिये 15 -20 दिनों तक आप इसे खा सकते हैं.

कल्पना कपिल...

मुख्य सचिव ने जिला कलेक्टर एवं जिला रसद अधिकारियों को दिये आवश्यक दिशा निर्देश

जयपुर, मुख्य सचिव श्री सी. के. मैथ्यू ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम-2013 के तहत सभी जिलों में 20 से 31 अक्टूबर 2013 तक खाद्य सामग्री वितरण किये जाने के लिए छपवाये जाने वाले कूपनों, राशन कार्डो पर शील अंकित करवाने, तैयार सूचियां उचित मूल्यों की दुकानों तक पहुंचाने तथा थोक विक्रेताओं द्वारा खाद्यान्न का उठाव कर उचित मूल्यों की दुकानों तक पहुंचाने सहित अन्य कार्यो की समीक्षा करते हुये संभागीय आयुक्त जोधपुर एवं संभाग के समस्त जिला कलेक्टर व जिला रसद अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये।

मुख्य सचिव ने जोधपुर संभाग के सभी जिला कलेक्टरों व जिला रसद अधिकारियों से कहा कि 20 अक्टूबर से शुरू होने वाले उपभोक्ता सप्ताह से पहले खाद्य सामग्री वितरण करवाने के लिए सभी तैयारियां पूर्ण करवाना सुनिश्चित करावे। उन्होंने भिन्न-भिन्न रंगो के कूपन छपवाने, राशन कार्डो पर शील अंकित करवाकर सूचियॉ उचित मूल्य की दुकानों तक पहुंचवाने, खाद्यान्न का उठाव एवं उचित मूल्यों की दुकानों पर पहुंच सुनिश्चित करने, उचित मूल्य दुकानदारों को प्रशिक्षण देने, नियुक्त कर्मचारियों का प्रशिक्षित करवाने सहित खाद्य सुरक्षा योजना से जुड़े अन्य बिन्दुओं के बारे मे चर्चा करते हुये आवश्यक व्यवस्थाए समय पर करवाने के निर्देश दिये।

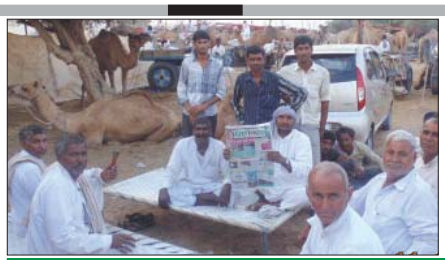

सृष्टी एग्रो किसानों के बीच सबसे लोकप्रिय समाचार पत्र बन गया है!किसानों ने सृष्टी एग्रो में आने वाले लेखों से मिल रहे लाभ के बारे में जानकारी दी!

राजस्थान खाद्य सुरक्षा कानून- मुख्यमंत्री

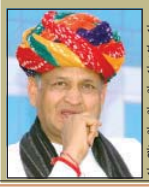

खाद्य सुरक्षा पर राज्य सरकार करेगी खर्च : मुख्यमंत्री ने कहा कि खाद्य सुरक्षा कानून को लागू करने के लिए जो भी धन खर्च करना होगा राज्य सरकार करेगी। यह केंद्र का कानून है और सभी राज्यों के लिए समान है।

दीपावली पर लगेंगे उपहार सहकार दीपोत्सव मेले

जयपुर, 12 अक्टूबर। दीपावली पर राज्य सहकारी उपभोक्ता संघ सहित सभी सहकारी उपभोक्ता भण्डार उपहार सहकार दीपोत्सव मेलों का आयोजन कर एक ही छत के नीचे आमजन को आवश्यक त्योहारी वस्तुएं उचित मूल्य पर उपलब्ध कराएंगे। सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार श्री पवन कुमार गोयल ने सभी सहकारी संस्थाओं को उपहार सहकार दीपोत्सव मेलों में गुणवत्ता व उचित मूल्य पर उपभोक्ता सामग्री वितरण पर खासतौर से ध्यान देने के निर्देश दिए हैं।

श्री गोयल ने बताया कि जयपुर शहर में उपभोक्ता संघ व जिलों में सहकारी उपभोक्ता भण्डार व सहकारी विपणन समितियों द्वारा दीपोत्सव मेलों का आयोजन किया जाएगा। उपहार दीपोत्सव मेले तीन से पांच दिन या स्थानीय आवश्यक्ताओं व मांग के अनुसार होंगे। श्री गोयल ने बताया कि संभागीय अतिरिक्त रजिस्ट्रार व संयुक्त रजिस्ट्रारों को निर्देशित किया गया है कि दीपोत्सव मेलों में पटाखे, मिठाइयां, सूखे मेवे, परिधान, बेड शीट्स, धनतेरस के बर्तन, इलेक्ट्रॉनिक्स आइटम्स, पूजन सामग्री आदि उपयोगी वस्तुएं उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जावे। उपभोक्ता संघ के प्रबंध संचालक श्री विजय कुमार शर्मा ने बताया कि जयपुर में उपहार दीपोत्सव मेले के आयोजन की आवश्यक तैयारियां शुरू कर दी है। शिवकाशी से सीधे पटाखे मंगाए जा रहे हैं। इसके अलावा अन्य त्योहारी सामग्री भी उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जा रही है। जिला उपभोक्ता भण्डारों व विपणन सहकारी समितियों व उपभोक्ता संघ से समन्वय बनाते हुए उपभोक्ता संघ द्वारा उनकी मांग पर पटाखे, एमएमटीसी के सिक्के व अन्य वस्तुएं उपलब्ध कराई जा सक्ती हैं।

आसाराम आश्रम की भूमि पर सवाल, मालिक को ही पता नहीं जमीन किसकी?

अजमेर. जमीन मालिक को ही ध्यान नहीं है कि उसकी जमीन है। यह बात सुनने में अजीब लगे, लेकिन है हकीकत। पुष्कर के आसाराम आश्रम की भूमि वन विभाग की भूमि है, यह तथ्य रेवेन्यू रिकॉर्ड में दर्ज है, लेकिन वन विभाग इससे बेखबर है। बात वन विभाग के अधिकारियों की नॉलेज में आने पर अब विभाग ने सेटलमेंट दफ्तर से सूचना मांगी है कि जब यह भूमि 1998 तक निजी खातेदारी की थी, तो 1999 में किस आधार पर वन विभाग के नाम दर्ज हो गई। पुष्कर के पंचकुंड में स्थित आसाराम आश्रम की भूमि को लेकर इन दिनों कई तरह के सवाल खड़े किए जा रहे हैं। पिछले दिनों वन विभाग द्वारा कराए गए सर्वे में खुलासा हुआ कि रेवेन्यू रिकॉर्ड में 1999 में आश्रम की यह भूमि वन विभाग के नाम अंकित है।

उदयपुर को मिलेगी अपनी मिट्टी में उगी सब्जियां

उदयपुर। जिले में हरी सब्जी की पैदावार खपत के मुकाबले 60 फीसदी हो रही है। कृषि योग्य जमीन तथा सिंचाई के साधन उपलब्ध होने के बावजूद ४० प्रतिशत सब्जी गुजरात तथा राजस्थान के अन्य जिलों से मंगवाई जा रही है। जिला प्रशासन ने ग्रामीण युवकों को सब्जी उत्पादन से जोडने की योजना बनाई है, जिससे उन्हें रोजगार मिलेगा। सब्जी के होलसेलर्स बाहर से महंगी सब्जियां मंगाने के बजाए अपनी सब्जियां बिक्री के लिए दूसरे जिलों व राज्यों में भेज सकेंगे।

महाराष्ट्र

चीनी मिलें बेचने के पीछे नेताओं की साठगांठ: अन्ना

मुंबई, प्रेट्र। सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे ने आरोप लगाया है कि महाराष्ट्र के कुछ नेताओं की साठगांठ से चीनी मिलों को घाटे वाली बताकर निजी हाथों में बेचा जा रहा है। अन्ना ने कहा कि ये लोग ऐसा जान-बूझकर कर रहे हैं।

किसानों की एक रैली में सामाजिक कार्यकर्ता मेधा पाटकर और सांसद राजू शेट्टी के साथ पहुंचे अन्ना हजारे ने मामले में न्यायिक जांच की मांग की है। अन्ना ने कहा, 'कई चीनी और कपास मिलों को घाटे वाली बताकर कौड़ी के भाव निजी हाथों में बेचा जा रहा है।' उन्होंने कहा, 'मिलों को जान-बूझकर घाटे वाली बताया गया। हमारी मांग है कि ऐसी 40 मिलों को निजी हाथों में बेचने के मामले की जांच के लिए न्यायिक समिति का गठन किया जाए।' रैली में शामिल नेता इसके बाद मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण से भी मिलने पहुंचे। सांसद शेट्टी ने बताया कि मुख्यमंत्री ने उच्च अधिकारियों से मामले की जांच कराने का आश्वासन दिया है।

18 शक्कर कारखानों के खिलाफ मामला दर्ज, केंद्र सरकार के निर्देशों का नहीं किया पालन

मुंबई। केंद्र सरकार के निर्देशानुसार लेवी की शक्कर राज्य सरकार को न देने वाले 18 शक्कर कारखानों के खिलाफ मामले दर्ज किए गए हैं। इनमें से ज्यादातर शक्कर कारखाने मालिक सत्ताधारी कांग्रेस व राकांपा से जुड़े हैं। उनके खिलाफ जीवनावश्यक वस्तु अधिनियम के तहत मामले दर्ज किए गए हैं। नियमों के अनुसार प्रत्येक शक्कर मिल को अपने कुल उत्पादन की १० फीसदी चीनी सरकार को लेवी के रूप में देना अनिवार्य है। इस शक्कर को गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वालों (बीपीएल) व अन्त्योदय योजना वाले राशन कार्डधारकों को सस्ती दरों पर उपलब्ध कराया जाता है। कुछ शक्कर मिल मालिक इस नियम का पालन नहीं करते। और सरकार को चीनी देने में कोताही बरतते हैं। खाद्य व आपूर्ति विभाग से मिली जानकारी के अनुसार इधर कुछ शक्कर मिल मालिकों ने यह कह कर लेवी वाली शक्कर देने से इनकार कर दिया कि केंद्र सरकार द्वारा चीनी को नियंत्रण मुक्त करने की वजह से लेवी शर्त रद्द हो गई है।

इस बारे में जब राज्य सरकार ने केंद्र से संपर्क किया तो बताया गया कि लेवी की शर्तें रद्द होने का आदेश जारी होने की तारीख से पहले तक शक्कर मिलों को लेवी की शक्कर देनी होगी। लेकिन कई शक्कर मिलों ने यह चीनी नहीं दी। इसके बाद राज्य के खाद्य व आपूर्ति विभाग ने केंद्र के निर्देश के अनुसार संबंधित जिलाधिकारियों को इस बाबत रिपोर्ट तैयार करने का आदेश दिया था। रिपोर्ट के आधार पर खाद्य व आपूर्ति विभाग ने १८ शक्कर मिल मालिकों के खिलाफ मामला दर्ज कराया है। राज्य सरकार के कड़े रुख के बाद कई शक्कर मिलों का रुख बदला और उन्होंने लेवी की शक्कर सरकार को सौंप दी। खाद्य व आपूर्ति विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि मामला दर्ज किए जाने की शुरुआत के बाद अभी तक 43 मिलों ने लेवी की शक्कर दे दी है। जबकि 14 मिलें जल्द ही लेवी की शक्कर देने वाली हैं।

चारा घोटाले की जांच सबूत मिले तो कराएंगे: मुख्यमंत्री

मुंबई. राज्य में चारा घोटाले के आरोपों को गलत बताते हुए मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण ने कहा है कि यदि इस तरह के घोटाले के बारे में सबूत मिले तो सरकार जांच कराने के लिए तैयार है। उन्होंने दावा किया कि राज्य सरकार ने सूखे का सामना सही तरीके से किया है। सोमवार को प्रदेश कांग्रेस कार्यालय गांधी भवन में ठाणे के आगरी सेना के अध्यक्ष राजाराम सालवी के कांग्रेस में प्रवेश के मौके पर मुख्यमंत्री पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। इस दौरान यह पूछे जाने पर कि विपक्ष महाराष्ट्र में चारा घोटाला के बारे में आरोप लगा रहा है, मुख्यमंत्री ने कहा कि विपक्ष का आरोप सही नहीं है। फिर भी यदि किसी जगह चारा घोटाले की बात सामने आती है तो सरकार इसकी जांच कराएगी।

S.S. AGRO (INDIA) MUMBAI
(DIRECT IMPORT FOR YOUR FERTILIZER/CHEMICALS)
- ZINK EDTA/COPPER EDTA/FE EDTA
- 100% WATER SOLUBLE FERTILIZER (NPK)
- HUMIC ACID
- SEAWEED EXTRACT
- AMINO ACID
- POTASSIUM HUMATE
- FULVIC ACID
- EDDHA
- NATCA
- BRASSINOLIDE
- DAP
- SODA ASH
- SODIUM SULPHIDE
- AMONIUM CLORIDE
- SODIUM BICARBONATE
- CALCIUM CARBIDE
- PHOSPHORIC ACID
- TRI SODIUM PHOSPHATE
- CITRIC ACID
- STPP

ALL KIND OF INORGANIC/ Organic Chemicals
CONTACT NO.-022-6710-3722
EMAIL:aarti@hindchem.com

Srushti
HINDCHEM CORPORATION
307,Linkway state, Link Road, Malad (w) ,Mumbai 400064. Tel: 022-66998360/61
Wholesale supplier of Fertilizers & Pesticides throughout the nation

Contact
Mob : 09829220788

पुणे में अन्ना हजारे का ऑपरेशन

पुणे: वरिष्ठ समाजसेवी अन्ना हजारे को रक्तचाप की तकलीफ के कारण शहर के जोशी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उन्हें मूत्रविकार की तकलीफ भी है। सोमवार दोपहर को डॉक्टरों ने जांच के बाद अन्ना को अस्पताल में भर्ती होने की सलाह दी थी। डॉक्टरों के मुताबिक उनका छोटा सा ऑपरेशन किया जा सकता है। शहर के मूत्रविकार विशेषज्ञ डॉ. एस.एस. बापट हजारे का इलाज कर रहे हैं। डॉ. बापट का कहना है कि हजारे का स्वास्थ्य अच्छा है लेकिन उम्रदराज होने की वजह से इस तरह की बीमारी हो जाती है। अन्ना का ऑपरेशन होगा या नहीं यह जांच रिपोर्ट आने के बाद डॉक्टरों की टीम द्वारा तय किया जाना है।

विज्ञापन हेतु संपर्क करें
मुंबई 08898600347
जयपुर 01413130277
पंजाब.,.....09820388538
दिल्ली .,,,,,09928960900

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक-**सुरेश जी. शर्मा** की ओर से सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगांव, पूर्व, मुंबई-62 से मुद्रीत किया और 307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064 यहां से प्रकाशित किया। संपादक-**सुरेश जी. शर्मा.**
contact Detail:Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908,Cell-9321758550,Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com